

श्रीगणेशायनम ॥

पंचाङ्गरत्नावली ॥

चतुर्युगप्रमणाम् ॥

कृत्युगप्रमाणम्१७२८००० त्रेतायुगप्रमाणम् १२९६००० द्वापर प्रमाणम् ८६४००० कलियुगप्रमाणम् ४३२००० संवत्विक्रमीय में ३०४४ अथवा शाके शालिवाहनीयमें ३१७९ जोड़ देनेसे गति कलि होता है कलिगति को कलियुग प्रमाण में हीन करने से भोग्य कलि होताहै ॥

अथ सम्वत्सरोत्पत्ति ज्ञानम् ॥

शाकाको २ जगह रखना प्रथमको २२ से गुणा करना उसमें ४२९१ जोड़ देना तिसमें १८७५ का भागलेना जो अंक लब्धि

मिले उसे दूसरी जगह के शाकेमें जोड़देना फिर उसमें ६० काभाग देना जो शेष बचे सो बृहस्पति के मतसे प्रभवादिगत सम्वत्सर होताहै शेषमें १ जोड़ लेनेसे प्रवेश संवत्सर होता है ॥ १८७५ के भागदेने से जो अंक शेष बचाहै उसको १२ से गुणाकरिके फिर (१८७५) का भागदेय जो लब्धि होय वह प्रवेश संवत्सर के भुक्त मास होंगे फिर शेषको ३० से गुणा करिके (१८७५) का भागदेय जो लब्धि होय वह भुक्त दिन होते हैं फिर शेषांक को ६० से गुणा करिके (१८७५) का भागदेय जो लब्धि होय वह भुक्त घटी होती है फिर शेषांक को ६० से गुणा करिके (१८७५) का भागदेय जो लब्धि होय वह भुक्तफल होते हैं भुक्त मासादिक को १२ मासमें घटाने से भोग्य मासादिक होते हैं यह संक्रांति मासवशात जानना ॥ श्री शाकेमें १७७६ घटानेसे भी, वर्त्तमान संवत्सर होताहै ॥ नरमदायां उत्तरे भागे व्यवहरंति इस संवत्सरमें १२ हीन करके जो संवत्सर प्राप्ति होय सो नरमादायां दक्षिणे भागे व्यवहरंति ॥

सम्वत्सर स्वमीज्ञानम् ॥

पांच वर्षकी १ युग संख्या होती है प्रभवादि ६० वर्षमें १२ युग होते हैं तिन वर्षोंके अधि देवता क्रमसे मुनियोंने कहे हैं युगप्रति क्रमसे विष्णु १ बृहस्पति २ इन्द्र ३ अग्नि ४ त्वष्टा ५ अहिर्बुध्न ६ पितर ७ विश्वदेव ८ चन्द्रमा ९ अग्नि १० अश्वनी कुमार ११ भगदेव १२ ॥ पहिली बीसी ब्रह्माकी दुसरी बीसी विष्णु की तिसरी बीसी शिवकी ॥

संवत्सरों के नाम॥

प्रभव १	विभव २	शुक्ल ३	प्रमोद ४	प्रजापति ५	अंगिरा ६	श्रीमुख ७
भाव ८	युवा ९	धाता १०	ईश्वर ११	बहुधान्य १२	प्रमाथी १३	विक्रम १४
वृष १५	चित्रभानु १६	सुभानु १७	तारण १८	पार्थिव १९	व्यय २०	सर्वजित २१
सर्वधारी २२	विरोधी २३	विकृत २४	खर २५	नंदन २६	विजय २७	जय २८
मन्मथ २९	दुर्मुख ३०	हेमलंब ३१	विलंब ३२	विकारी ३३	सर्वरी ३४	प्लव ३५
शुभकृत् ३६	शोभन ३७	क्रोधी ३८	विश्वावसु ३९	पराभव ४०	प्लवंग ४१	कीलक ४२
सौम्य ४३	साधारण ४४	विरोधक ४५	परिधावी ४६	प्रमादी ४७	आनंद ४८	राक्षस ४९
नल ५०	पिंगल ५१	कालयुक्त ५२	सिद्धार्थ ५३	रौद्र ५४	दुर्मति ५५	दुंदुभी ५६
रुधिरोद्गारी ५७	रक्ताक्ष ५८	क्रोधन ५९	क्षय ६०	०	०	०

संक्रांति वाहनादि ज्ञानम् ॥

संक्रांति का ज्ञान चक्रों से जानलेना चाहिये ॥

ऋतु चक्रम् ॥

सूर्यराशि	१० । ११	१२ । १	२ । ३	४ । ५	६ । ७	८ । ९
ऋतु	शिशिर	बसंत	ग्रीष्म	वर्षा	शरद	हेमंत
अयन	उत्तरायणेरविः			दक्षिणायनेरविः		
सूर्यराशि	१० । ११ । १२ । १ । २ । ३ ।			४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९		

संक्रांति मूहूर्तो चक्रम् ॥

मूहूर्तो १५	मूहूर्तो ३०	मूहूर्तो ४५
श्ले- शत- आर्द्रा स्वाति- भ- ज्ये-	धनिष्ठा- श्र- कृ- म- पूफा० पूषा- पूभा- मू- मृ- रे- चि- ऽनुराधा- ह- अश्व० पुष्य-	वि- पुन- रो- उफा- उषा- उभा-
अघन्य संज्ञा १५	सम संज्ञा ३०	बृहत्संज्ञा ४५

संक्रांति वाहनादि चक्रम् ॥ संक्रान्ति जिस करण में लगै उसी के हिसाब से चक्रमें देखलेय ॥

व	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनी	चतुष्पद	नाग	किंस्तुघ्न	करण
ाह	व्याघ्र	शूकर	खर	हाथी	माहिष	घोड़ा	स्वान	मेष	गौ	मुरगा	वाहन
ाज	अश्व	बलद	मीढा	खर	ऊंट	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	बंदर	उपवाहन
ति	भीति	पीड़ा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	सौर्य	सुभिक्ष	पीड़ा	सौर्य	अपमृ०	फल
़ा	कुमारी	गताल	युवा	प्रौढ़ा	प्रगल्भा	वृद्धा	वंध्या	मति वंध्या	पुत्रेशावली	सन्यासिनी	वय.
ठी	बैठी	ऊर्ध्व	सुप्त	बैठी	बैठी	बैठी	ऊर्ध्व	सुप्त	सुप्त	ऊर्ध्व	स्थितिः
पम	मध्यम	महर्घ	नेष्ट	मध्यम	मध्यम	मध्यम	महर्घ	नेष्ट	नेष्ट	महर्घ	फल
र्ण	रौप्य	ताम्र	कांस्य	लोह	खप्पर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ	पात्र
ाजा	कंकण	मोती	प्रवाल	मुकुट	मणि	गुंजा	कौडी	नील	कांच	सुवर्ण	भूषण
चित्र	पर्ण	हरित	भूजर्य	सित	पांडु	नील	कृष्णाजिन	चर्म	वल्कल	पांडुर	कंचुकी
त	पीत	हरित	पांडु	रक्त	श्याम	असित	चित्र	कम्मर	दिगम्बर	मेघसदृश	वस्त्र
ुधी	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	माला	पाश	अंकुश	अस्त्र	बाण	शस्त्र
न	परमान्न	भिक्षा	पकान्न	दुग्ध	दही	चित्रान्न	गुड़	सहत	घृत	शक्कर	भोजन
तूरी	केसर	चंदन	माटी	गोरोचन	महावरि	बिलार महर	हरिद्रा	सुरमा	अगर	कपूर	लेप
ता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	शंकरवर्ण	जाति
केसर	चमेली	बकुल	केत०कपड़ा	बेल	मदार	दूब	कमल	बेला	पाडर	दुपहरिया	पुष्प

सम्वत्सर मध्ये लाभ व्यय ज्ञानम् ॥

विंशोत्तरी व अष्टोत्तरी क्रमसे राशिके स्वामी की वर्ष संख्या से वर्षके राजाकी वर्ष संख्या को परस्पर जोड़ देवे ३ से गुणाकरे ५ और युक्त करे १५ का भाग देय जो शेष रहें वह लाभ होता है लब्धि को उसे गुणा करे ५ युक्तकरे १५ का भाग देय शेष जो बचे वह व्यय (खर्च) होताहै ॥ चक्रसे समझ लेना सम्वत के राजा रव्यादिसे जानना ॥

१२० विंशोत्तरीमतानुसार लाभव्ययः ॥

	राशि	मेष	वृष	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मीन	
६	रवि	२४ ११	८ ५	१४ २	८ १४	११ ११	१४ २	८ ५	१४ ११	११ ५	५ ५	५ ५	११ २	लाभ व्यय
१०	चंद्र	११ १४	५ ८	११ ५	५ २	८ १४	११ ५	५ ८	११ १४	८ ५	२ ८	२ ८	८ ५	ला० व्य०
७	मं०	२ १४	११ ५	५ ५	११ १४	१४ ११	५ ५	११ ५	२ १४	१४ २	८ ५	८ ५	१४ २	ला० व्य०
१७	बु०	५ ५	११ ११	२ ११	११ ५	१४ २	२ ११	११ ११	५ ५	१४ ८	८ ११	८ ११	१४ ८	ला० व्य०
१६	बृ०	१४ २	८ ११	१४ ८	८ ५	११ २	१४ ८	८ ११	१४ २	११ ८	५ ११	५ ११	११ ८	ला० व्य०
२०	शु०	११ ५	५ १४	११ ११	५ [illegible]	८ ५	११ ११	५ १४	११ ५	८ ११	२ १४	२ १४	८ ११	ला० व्य०
१९	शनि	८ ५	२ १४	८ ११	२ ८	५ ५	८ ११	२ १४	८ ५	५ ११	[illegible] १	१४ ११	५ ११	ला० व्य०

१०८ अष्टोत्तरीमतानुसार लाभव्ययः ॥

राशि	मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०		
रवि	२ १४	११ ५	१४ २	८ २	११ ११	१४ २	११ ५	२ १४	५ ५	८ १४	८ १४	५ ५	लाभ व्यय	१
चंद्र	१४ २	८ ११	११ ८	५ ८	८ २	११ ८	८ ११	१४ २	२ ११	५ ५	५ ५	२ ११	ला० व्य०	१४
मं०	८ १४	२ ८	५ ५	१४ २	२ १४	५ ५	२ ८	८ १४	११ ५	१४ १४	१४ १४	११ ५	ला० व्य०	८
बु०	५ ५	१४ ११	२ ११	११ ८	१४ २	२ ११	१४ ११	५ ५	८ ११	११ ५	११ ५	८ ११	ला० व्य०	१७
बृ०	११ ५	५ १४	८ ११	२ ११	५ ५	८ ११	५ १४	११ ५	१४ ११	२ ८	२ ८	१४ ११	ला० व्य०	१९
शु०	२ ८	११ १४	१४ ११	८ ११	११ ५	१४ ११	११ १४	२ ८	५ १४	८ ८	८ ८	५ १४	ला० व्य०	२१
शनि	१४ १४	८ ८	११ ५	५ ५	८ १४	११ ५	८ ८	१४ १४	२ ८	५ २	५ २	२ ८	ला० व्य०	१०

संवत्सर मध्ये वर्षादि विश्वा ज्ञानम् ॥

शाके को तीनसे गुणा करिके सात का भाग लेना लब्धिको अलग रखना शेष को दूना करके पांच जोड़ देना जो अंक होय सो वर्षा के विश्वा जानिये और लब्धि को तीनसे गुणाकरके सात का भाग देना लब्धि को अलग रखना शेषको दूना करके ५ जोड़ देना जो अंक होय सो धान्य के विश्वा जानिये फिर लब्धांक को इसी प्रकार गणितक्रिया बारम्बार करनेसे तृण-शीत-तेज-वायु- वृद्धि-क्षय-विग्रह इन सबके विश्वा पूर्व प्रकार अलग२ निकलैंगे ॥ शाके को ४ से गुणा करना उसमें ७ का भाग लेना

लब्धि को अलग रखना शेषांक को दूना करना ३ और जोड़ देना जो अंक होय सो क्षुधा के बिश्वा जानिये लब्धि को फिर ४ से गुणा करके ७ का भाग लेना लब्धि अलग रखना शेषांक को दूना करना ३ और जोड देना जो अंक होय सो तृषा के बिश्वा जानिये फिर लब्धांक को पूर्वोक्त बारम्बार क्रिया करने से निद्राआलस्य, उद्यम, शांति, क्रोध, दंभ, पाखंड, लोभ, मैथुन, रस, फल, उत्साह के अलग २ विश्वा निकल आवेंगे ॥ श्री ॥ शाकाको ८ से गुणा करना ९ का भाग देना लब्धिको अलग रखना शेषांक को दूना करके १ जोड़ देना जो अंक होय सो उग्रत्व के बिश्वा जानिये फिर लब्धांक को ८ से गुणा करके ९ भाग देने से जो लब्धि होय उसको अलग रखना शेषांक को दूना करके १ जोड़ देना जो अंक होय सो पाप के बिश्वा जानिये फिर लब्धि को वारंवार इसी प्रकार क्रिया करने से पुण्य-व्याधि-व्याधिनाश-आचार-अनाचार-मृत्यु जन्म-देशोपद्रव-देशस्वास्थ्य-चौर-चौरनास- अग्नि- अग्निशान्ति इन सबके बिश्वा अलग २ बन जावेंगे ॥ श्री ॥ शाके को चार जगह रक्खे प्रथम को ५ से गुणा दूसरे को ७ से गुणा करे तीसरे को ६ से गुणा करे चौथे को ११ से गुणा करे इन चारों अंकों में अलग २ सात का भाग देय शेषांकों को दूना दूना करके तीन तीन जोड़देय तो क्रम से उद्भिज-जरायुज-अंडज स्वेदज—जीवों के बिश्वा बनजावेंगे ॥ श्री ॥ शाका को सात से गुणा करना और ६ का भाग लेना लब्धि को अलग रखना शेषांक को दूना करना उसमें ३और जोड़ देना जो अंकहोय

सो टीड़ी के विश्वा जानिये फिर लब्धांक को ७ से गुणा करना और ९ का भाग लेना लब्धिको अलग रखना. शेषांक को दूना करना ३ और जोड़ देना जो अंक होय सो तोताके विश्वा जानिये फिर लब्धांक को बारम्बार इसी क्रिया से मूषक-सोना तांबा-स्वचक्र-परचक्र वृष्टि-वृष्टिनास के विश्वा अलग-अलग निकल आवेंगे ॥ श्री ॥

संवत्सरविश्वाज्ञानम् ॥

कर्क की संक्रांति जिस दिन होय उसी दिन के अनुसार सम्वत्सर के बिश्वा जानिये यथा रविवार को कर्क की संक्रांति होय तो संवत्सर के १० दश बिश्वा जानिये सोमवार को २० विश्वा मंगलको ८ विश्वा बुधको १२ बिश्वा बृहस्पति को १८ विश्वा शुक्रवारको भी १८ विश्वा शनिबार को कर्क की संक्रांति होने से सम्वत्सर के ४ बिश्वा होते हैं ॥

चतुर्मेघज्ञानम् ॥

शाके में ३५ जोड़कर भाग ४ को देय शेष १ बचे तो आवर्त्तक नाम मेघ २ बचैं तो संवर्त्तक नाम ३ बचैं तो पुष्कर नाम ४ बचैं तो द्रोण संज्ञक मेघ जानिये ॥ मेघफलम् ॥

आवर्त में महावर्त होय संवर्तक में बहुत जल बर्षै पुष्कर में चित्र बिचित्र बर्षा होय द्रोणमें बूड़ाआवै ॥

अथनवमेघज्ञानम् ॥

शाके में १५१२ हीन करके ९ का भाग देय जो शेष रहै उसको १ में हीन करदेय जो अंक प्राप्ति होय सो क्रमसे जानना

यथा—आवर्त १ संवर्त २ द्रोण ३ पुष्कर ४ कीलक ५ नील ६ वरुण ७ वायु ८ तम ९ फलम्

अष्टनागज्ञानम् ॥

शाके में रसाद्रि (७६) युक्त करके ८ का भागदेयं शेष बचे सो क्रमसे अष्टनाग जानना यथा अनन्त १ वासुकी २ पद्म ३ महापद्म ४ सुतक्षक ५ कुलीर ६ कर्कट ७ शंख ८ ॥ फलम् ॥

द्वादशनागज्ञानम् ॥

शाके में १५१० हीन करके १२ का भाग देय शेष बचे सो क्रमसे द्वादश नाग जानना यथा सत्रुद्धो१ नन्दसारी २ कर्कोटक ३ पृथुश्रवा ४ वासुकी ५ तक्षक ६ कंबल ७ अश्वतर ८ हेममाली ९ नरेंद्र १० बज्रदंष्ट्र ११ बृष १२ ॥ फलम् ॥

सप्तवायुज्ञानम् ॥

शाके में शशांक (१) युक्त करके ७ का भागदेय शेष जो बचे सो क्रम से सप्तवात जानना यथा आवहः १ प्रवहः २ संवहः ३ विवहः ४ उद्वहः ५ अतिवहः ६ वायुः ७ ॥ फलम् ॥

सम्वत्सरों के फल ॥

१—प्रभव १ ब्रह्मा स्वामी-चैत्र वैशाप श्रेष्ट समस्तु वर्ष समर्घता ज्येष्ठ-अषाढ़ श्रा०सर्वधान्य महर्घता गोधूममुद्गादीनां युगंधारीनां च विशेष महर्घं भाद्रपदेऽपि शुभः आश्विनेश्वकार्तिनमहर्घता पश्चाद्रोगपीड़ा महती सर्व क्रयाणक महर्घ ॥

२—विभवः २ विष्णुस्वामी-रोग व्याप्तिः पृथिव्यां नागपुरीषभंगः तैलंग मगध चीन देशे महर्घता उच्च मुलतानस्थलमहाविग्रहः

अन्यत्रसमताः चैत्रादिमासस्त्रयो महर्घना ततो मेघबाहुल्यं कार्तिकादयोमासेषु सर्ववस्तु समर्घता गोधूमा समा ॥

३—शुक्लः३रुद्रस्वामी-छत्रभंगो म्लेच्छ देशेषु मंत्रिणोराज्यं चैत्रादि मास ३ समता आषाढ़ादि मास ३ महामेघः आश्विने जनरोगः घृतानांसमर्घं फाल्गुण मासो व ड्वरं सर्वत्रविग्रहः लोक ग्राम पीड़ा देशेषु आकुलता शून्यत्वंग्रामेषु ॥

४—प्रमोद ४ रवि स्वामी-मध्यमवर्षा अल्पवृष्टि मंडले मेद पात पीड़ा देश उद्वेशः म्लेच्छ वर्णक्षयः छत्रभंगा पर्वत तटे स्वल्पप्रजा तैलंगराजविड्वरंचैत्र वैशाषेचमहर्घता ज्येष्ठेरोग पीड़ा आषाढ़ादि मास ३ अल्पमेघः आश्विने किंचिद्वर्षा धान्यस्यत्रयोदशफदिया कलसिका कार्तिकादि मास ४ सर्वरस महर्घता फाल्गुनमध्यमा ॥

५—प्रजापति ५ चन्द्र स्वामी—द्वादशैव मासा शुभाःअल्पमेघः आश्विनेरोग बाहुल्यं धान्यस्य कलशिका त्रिंशत्फादियानाणकः कार्तिकादि २ मास मंदं पौषादि मास ३ अरिष्टं कचिदुत्पात दर्शनेपि पीडा ॥

६—अंगिरा ६ मंगल स्वामी-चैत्र वैशाषश्चमंदः ज्येष्ठे वायु प्रबलः आषाढ़े मेघबाहुल्यं श्रवणादि मास ३ रोग पीड़ा कार्तिके सर्व धान्य निष्पत्तिः पौषादि मास ३ समता ॥

७—सुमुखः ७ बुधस्वामी-चैत्रेसर्व धान्य महर्घं आषाढ़े कृष्णपक्षे अत्यन्त मेघवर्षाः श्रावणे गोधूमा महर्घा घृते धान्येच द्विगुणो लाभः वणिक लोग पीड़ा पश्चिमायां रौरवम् पूर्वस्याम् परचक्रं उच्य मुलतानस्थले प्रजापीड़ा भाद्रपदे वर्षा अश्विनादिषु प्रजा प्रसन्नः ॥

८—भावः ८ गुरु स्वामी-बहु क्षीरा गावो वर्षा बहुला विंशोप काः सर्व वस्तु महर्घता उच्च मुलतान अयोध्या सुराजविड्वरं लोक पीड़ा घृत गुड़ अहिफेन पुंगी मंजिष्ठ मरीच चंदन वस्तु महर्घता चैत्रे समताः वैशाषे महर्घं धान्ये द्विगुणो लाभः आषाढ़े श्रावणे किंचिद्वर्षा भाद्रे मेघ वर्षा आश्विने रोग बाहुल्यं कार्तिक उत्तमा मार्ग शीर्षादि मास ४ राजविड्वरं मंदं ॥

६—युवा ६ शुक्र स्वामी-भूकंप उल्काभयं बहुलं चैत्रादि मास २ उत्पातः ज्येष्ठ रोगः आषाढ़े शुद्धपक्षे महामेघः वायुः अन्नं महर्घं भाद्रपद दिने १४ महावृष्टिः व्याकुलता राजविग्रहः उत्तर देशेरौरवं दुर्भिक्षं पूर्वस्याम् निष्फला कृषिर्दक्षिणस्याम् वैरं विरोधो मार्गे विपन्नता पश्चिमायां लोक पीड़ा पश्चाद्दुर्भिक्षं सर्वरसेषुसमता कार्तिकादि मास २ उत्तमः पौष्ये माघमध्यमः फाल्गुण मासे किंचित्क्लेशः माघादौ मार्गे विग्रहः ॥

१०—धाता १० शनि स्वामी-चैत्र वैशाषे सर्व धान्य महर्घता ज्येष्ठ मासे समता आषाढाल्प मेघः घृत तैल युगंधरी कार्पास मंजिष्ठ मरीच पुंगीफलं महर्घताः श्रावणे सर्वधान्य महर्घताः भाद्रपदे पुरुषा नपुंसकानि पश्चिमायां महतीमेघ वर्षा सर्वधान्यं महर्घं दक्षिणोत्तरयोर्मध्ये महामेघः परलोक पीड़ा आश्विने रस कस धातु महर्घता कार्तिक में सर्व अन्न समर्घं ॥

११—ईश्वर ११ राहु स्वामी-उत्तरस्यां दुर्भिक्षं पूर्वस्यां सुभिक्षं पश्चिमायां परस्पर विरोधः चैत्रं वैशाषे अन्न महर्घता जेष्ठाषाढ़यो रल्प मेघः परं सर्व धान्य महर्घता आश्विने घृत महर्घता कार्तिके रौरवं दुर्भिक्षं मंजिष्ठ मरीच लवण लवंग एला पुंगी

एतद्वस्तु महर्घता मार्ग शीर्षादि मास ४ अति दुर्भिक्षं धान्य महर्घं मनुष्याणां रुंड मुंडादि भूम्या पतंति ॥

१२—बहु धान्य १२ केतु स्वामी—पुरुषानिर्वीर्याः पश्चिमायां शुभिक्षं परं सौख्यं सर्व देश मध्ये दक्षिणस्यां विग्रहः परं यहा भयं उत्तर पथे सर्व देशेषु पीड़ा पूर्वस्यां दुर्भिक्षं अन्न संगृहकार्याः चैत्र बैशाषयो किंचिन्महर्घता ज्येष्ठ मासे चतुर्गुणो लाभः श्रावणाषाढ़योर्मेघः अन्नंसर्वमहर्घं षड्गुणोलाभः भाद्रपदे अत्यंतमेघः सर्वधान्य समर्घता आश्विनेमेघः कणक धाराभिः कार्तिकादि ४ मास समता ॥

१३—प्रमाथी १३रविस्वामी-आषाढ़े श्रावणेत्र अल्पमेघः भाद्रपदे पंचम्यां किंचन्मेघः चैत्रेगोधूम युगंधरी महर्घता वैशाषे ज्येष्ठत्रा सर्वत्रधान्य महर्घता परं कृष्ण सप्तमी अमायां महामेघः परंअतिवारिष्टं कार्तिके दिने २१ मास ५ सर्वअन्न महर्घता सर्वरस महर्घता मंजिष्ट पुंगी हिंगुल काश्मीर अगरु पट्ट सूत्र नारिकेल एतद्वस्तु महर्घता ॥

१४—विक्रम् १४ चन्द्रस्वामी-राजा प्रजा सौख्यं अतिमेघः चैत्र वैशाषे महर्घं अन्ने द्विगुणलाभः परं वैशाषे म्लेच्छभयात् नगरं उद्वसत्वंअरण्ये वासः वैशाषे दिन १० महावायुः भूमिकंपं प्रजा पीड़ा ज्येष्ठमासेदुर्भिक्षं आषाढ़े प्रलयः श्रावण भाद्रपदे महामेघः प्रजा सुखं सर्वधान्यसमर्घं सर्ववस्तु समता आश्विने रोगः सर्व रससमता कार्तिकादि मास ५ सर्व अन्न समता ॥

१५—वृषः१५ भौमस्वामी-वर्षा बहुला परं नृपाणां पीड़ाछत्रभंगा ज्येष्टेवर्षे अन्न समर्घता धान्ये त्रिगुणोलाभः आषाढ़े अन्न महर्घता

श्रावणे महान्मेघःभाद्रपदाश्विनौ सर्वे धान्ये समता घृत महर्घता पश्चिमेन्नंमहर्घं देशा उद्धशाः पश्चिमायां किंचितदुर्भिक्षं अश्विनेमेघः सर्ववस्तु समर्घता कार्तिके किंचिदरिष्ठं मार्गशीर्षे दौस्थं पौषादिमास ३ महर्घता परं मध्यमं समयः ॥

१६—चित्रभान १६ बुधस्वामी लोक सुखी पूर्वे अल्पं मेघः पश्चात्महती वर्षा धान्यघृतं समता बैशाषे अन्न समंभावेनः ज्येष्ठादि मास तीन महान्मेघः सर्वधान्य महर्घता भाद्रपदादि मास २ रोगर्तिः कार्तिके महामारी भयम् मार्गशीर्षद्वयेऽरिष्टं माघद्वये सरोग प्रजा परं सर्वान्न रस समर्घता बैशाष ज्येष्ठयो रोग पीड़ा अन्न व कर्षाणक सर्व वस्तु महर्घता ॥

१७—सुभानु १७ गुरुस्वामी-पूर्वस्यां दुर्भिक्ष लोक सुखी चैत्रे महर्घता बैशाष ज्येष्ठयो रोग पीड़ा आषाढ़े अन्न महर्घ श्रावणे मेघः अन्न समता भाद्र महामेघः आश्विने रोग पीड़ा गोधूमा समता युगंधरी मुद्रादि मणप्रतिफदिया नाणकानि १२ धातु सर्व वस्तु महर्घं घृत समता कार्तिकादि मास २ मध्यम राजपीड़िता लोकाः पौष्यादि मास ३ रोग पीड़ा भयंकरः परस्पर विरोधः ॥

१८-तारण १८ शुक्र स्वामी-अतिवायुः परस्परं युद्धं वहुलं चैत्रे सरोगा बैशाषे सर्ववस्तु समर्घं ज्येष्टे महान्वायुः आषाढ़े अल्प वृष्टिः श्रावणे सप्तमी तो नवमी तो वा वर्षा भाद्रपदे एकादश्यां अत्यन्त मेघः आश्विने अन्न महर्घं सर्वरस संग्रह कार्यः कार्तिके महर्घता मार्गे विग्रहः धान्य महर्घं योगिनी पुरे महाभयं राज्ञां विरोधःम्लेच्छभयं पौष्ये युद्ध पश्चिमायां धान्यं महर्घं उत्तरपथे महा दुर्भिक्षं फाल्गुण मासे मध्यमः तस्कर भयम् अन्न महर्घं विग्रहः

राजा विरोधात महत्पातकं पूर्वीयां दक्षिणस्यां वा वनेवासः पश्चिमायां महायुद्धं परं अन्य वस्तु समर्घं ॥

१९—पार्थिव १९ शनि स्वामी-उत्पाता बहुला चैत्रे वैशाषेच महर्घता सर्वतो विग्रहः ज्येष्ठे रोग पीडा नृप युद्धं आषाढ़े अल्पमेघः धान्यं महर्घं महावायुः श्रावणेखंड वृष्टि भाद्रपदे नैर्ऋत्य वायुः अन्न महर्घता अश्विने वृष्टि गोधूमंयुगंधरी मुद्गादि महर्घता कार्तिकादि द्वयरोग पीड़ा पौष माघयो महर्घता फाल्गुणे समता ॥

२०-व्यय२०राहु स्वामी-अना वृष्टिः दुर्भिक्ष रौरवं चैत्रो मध्यमः वैशाषद्वये महर्घता देश विग्रहः आषाढ़े अल्पमेघः परं महर्घता श्रावण दुर्भिक्ष मध्य देशे विग्रहः दक्षिणस्यां प्रजापीड़ा भाद्र पदे खंड वृष्टिः अन्न महर्घता आश्विने रोगं पीड़ा पूर्वस्यां विग्रहः गोधूमामहर्घता मध्यमःसमये कार्तिकरोग पीडा यद्धाविग्रहोपशमः मार्गशीर्ष मासे अन्न महर्घता परं युद्धं किंचित् पौषादि २ मास अति महर्घता फाल्गुणे समता परं मार्ग वैषम्यं अन्नं महर्घं ॥

इति उत्तम विंशतिः ॥

२१-सर्वजित २१ ब्रह्मास्वामी-चैत्रादि ३ मास समर्घ आषाढ़े अल्पमेघः श्रावणे महामेघः सर्वधान्य रस वस्तु समर्घता नवीन मुद्गोदयः राजाविग्रह परस्परं अन्नमहर्घता भाद्रपदे दिन ५ पश्चान्महतीवृष्टिः आश्विने रोगार्तिः सर्वधान्य समर्घता कार्तिके राजा राज्यं करोति प्रजासुखं अन्न समर्घता मार्ग पौषोत्तमो सर्वलोकसुखं माघमासे मेघा दिन ३ मंजिष्टा सुहरा मरीचि शुंठी

पिप्पली सुपारी प्रमुख महर्घता फाल्गुणे सर्ववस्तु समता उत्तमः समयः ॥

२१-सर्वधारी २२ विष्णुस्वामी-राजाराज्य सुस्थः प्रजासुखं अन्नसमर्घ मार्ग शीर्ष पौष्यौ उत्तमः सर्वलोकसुखं पट दर्शन महत्पूजा सर्वनगर देशेषु स्थानवासः चैत्र सर्वधान्य समता उत्तरापथे दुःकालः वैशाषे महर्घं जेष्ट महर्घता महाभयं अश्टिाषादे महामेघः श्रावणे अल्प वर्षा अन्नं महर्घं भाद्रपदे दुर्भिक्षं आश्विनेरोगः अन्न समता राज्ञांपरस्पर विरोधः अन्नमहर्घता ॥

२३-विरोधी २३ रुद्रस्वामी-चैत्रादि ३ मास धान्य महर्घता आषाढे श्रावणे अतिवर्षा भाद्रपदे खंड वृष्टिः मासत्रयऽतिभयं किंचिदुत्तपात राजाप्रजा सुखी क्वचिद्राज्य युद्धं सर्वधान्य समर्घता आश्विने सर्वसमर्घ कार्तिके मारीरोग बहुलता मार्गशीर्षादि मास ४ गुर्जरे मरुदेशे अन्नमहर्घं ॥

२४—विकृत् २४ रविस्वामी-अकाले वर्षा राजविग्रहः देशा उद्वसा मरुधरायां दुर्भिक्षं चैत्रादिमास ४ महर्घता कण कलशिका प्रतिफदिया नाणके एक सतेन लाभः श्रावणमास द्वय मेघवृष्टिर्नास्ति रौरवं दुर्भिक्षं आश्विने उत्पात भूकंप कार्तिके क्षत्रभंगः सुवर्णादि सर्वधातु समर्घता कण कलशिका प्रति २० फदिया नाणकानां एक प्राप्तिर्न भवति ॥

२५—खर २५ चंद्रस्वामी—चैत्रादिमास ५ महतीवर्षा सुभिक्ष प्रजासुखं सर्वलोके गुरुणां महत्वं पश्चिमायां सुभिक्षं आश्विने अन्न समता रस महर्घता मंजिष्ठा सुहागा वस्तुतो मरुधरायां त्रिगुणो लाभः म्लेच्छक्षयं परं रोगपीड़ा सर्वधान्यनिष्पत्तिः प्रजा

सुखं कार्तिकादि मास ५ मध्यम सर्वधान्य समर्घता ॥

२६—नंदन २६ भौमस्वामी—प्रजासुखं सर्वधान्य समता चैत्र मध्ये करका पतंति वैशाषे धान्य महर्घं प्रचंडवायु ज्येष्टेपि तथैव महर्घं आषाढ़े महामेघः श्रावणे अल्पवर्षा भाद्रपदे महावृष्टि अश्विने सुभिक्षं राजाराज्यं प्रजासुखं कार्तिके सुभिक्षं अन्न समता मार्गशीर्षादि ४ मास महर्घता मंजिष्ठा लवणौ महर्घता ॥

२७—विजय २७ स्वामी—बुधः सर्वदेशे महापीडा राज्ञां परस्पर विरोधः अन्नमहर्घं तुच्छ जलं महिलोहित पापिनी विप्र गो महिष अश्व हस्ती पीड़ा चैत्रमध्ये महती वर्षा वैशाषे ज्येष्ठे अन्नं महर्घता आषाढ़े श्रावणे अल्पमेघः कण कलशिका प्रतिफदिया ४० भाद्रपदे वर्षा वर्षति कलशिका प्रतिफदिया ६४ आश्विने मध्ये वणिक जन पीड़ा अन्नं महर्घता फाल्गुणे समतापरं विग्रहः धान्ये षट् गुणोलाभः ॥

२८—जय२८गुरुस्वामी—महासुभिक्षं चैत्रे महर्घता वैशाष ज्येष्ठयो समर्घता आषाढ़े मेघवर्षा अन्नमहर्घं श्रावणे दिन २४ महामेघः भाद्रपदे दिन ७ मेघवृष्टिः आश्विने अन्नंसमर्घं कण नांमणं प्रतिद्रामा ३५ लभ्या स्वर्णादि धातु समता कार्तिकादि मास ५ उत्तमं अन्न समता अन्य वस्तूनि महर्घता भवति मौक्तिक प्रवालकादि महर्घता मार्गशीर्षे रोग बहुलता वणिक पीड़ा उच्च मुलतान देशे रोग पीड़ा छत्रभंगः लोकदुःखिता॥

२९—मन्मथ २९ शुक्रस्वामी-राजविरोधः पुर्वदेशेलोकपीड़ा परं अतिवृष्टिः रोग बाहुल्यं धान्यं संग्रह चैत्रे वर्षाभूमि कंपः वैशाषे समर्घता ज्येष्टाषाढ़ महर्घता धान्ये षट्गुणोलाभः श्रावणे अल्पमेघ

भाद्रेमहामेघः दिन २४ आश्विने रोग पीड़ा अन्नं महर्घं धान्यं मणं प्रतिद्रामा ६० लभ्यते सर्वधान्य समर्घता कार्तिके सुभिक्षं अन्नसमता मार्गशीर्षादि मास ३ अन्नसमर्घं राजा लोकौ सुखं सर्वधातु समर्घता वस्त्रमहर्घता ॥

३०—दुर्मुख ३० शनिस्वामी-अत्र अशुभ अल्पमेघः महतां लोकानां पीड़ा सरोगाकुलाः उत्तरापथे दुःकालः पश्चिमायां महापीड़ा पूर्वदेशे सुभिक्षं अन्न महर्घं क्षत्रियेषु नकुल सर्पाभ्यां विषगृह्यते चैत्रादि मास ३ महर्घता आषाढ़े अल्पमेघः श्रावणे प्रचंडवायुः सर्वधान्य महर्घता भाद्रपदकणानांमणं प्रतिद्रामा ८५ लभ्यंते खंडवृष्टिः आश्विने रोगपीड़ा सर्वधातुवः समर्घाः कार्तिकादि मास ४ रौरवं दुर्भिक्षं जीवादयो अकराः प्रवर्तंते मातापुत्रं विक्रयः पितापुत्र स्नेहमुक्तः फाल्गुणे रोगपीड़ा राज्ञां परस्पर विरोधः लोक पीड़ा ॥

३१—हेमलंब ३१ राहु स्वामी-अति रौरवं सरोगा लोका भूकंपादयः उत्पातः वणिक पीड़ा चैत्रे वैशाखे पीड़ा धान्यादि मंजिष्ठा मंदभावः परंचक्रागम ज्येष्ठादिमास ३ धान्यं महर्घता चतुर्गुणो लाभः भाद्रपदेमहामेघः अन्नसमता मंजिष्ठा मरीच लवंग महर्घता कार्तिके छत्र भंगः लोक पीड़ा अन्न कलशिका प्रतिफदिया १०२ सर्व धातु समर्घता चतुष्पदानां पीड़ा मार्गशीर्षादि मास ४ राज्ञां सुस्थतालोक सुखिनः ॥

३२—विलंब ३२ रविस्वामी-चैत्र वैशाषयो धान्यं समर्घता आषाढ़ श्रावणे धान्यं कलशिका प्रति टका ४ फदिया २५ लभ्यतेआषाढ़े मेघ अल्पःश्रावणेमहामेघःसुभिक्षं भाद्रपदेदिन२१

वर्षा बहुला परं गोधूमाश्च महर्घता पश्चिमायां सुभिक्षं राजविग्रहः पूर्वदेशे अन्न महर्घं अन्नं दुःप्राप्यं दक्षिणदेशे राज्ञामन्योन्य विरोधः आश्विने अन्न महर्घता रोगपीड़ा सर्व कृयाणक वस्तु महर्घं कार्तिकादिमास ५ धान्य कलशिका प्रति फदिया १० लभ्यते ॥

२३—विकारी २३ चन्द्रस्वामी-सर्व अन्न महर्घ सर्व वस्तु महर्घता द्विजः सुखिनः चैत्रादिमास ३ धान्य महर्घता आषाढ़े श्रावणे महान्मेघः सुभिक्षं भाद्रपदे स्वल्प मेघः आश्विने सर्प भयं केतूदयः अन्न कलशिका प्रति फदिया १० लभ्यंते सर्व वस्तु महर्घता कार्तिकादिमास २ धान्यं समर्घ पौषे रोगपीड़ा लोकः सुखी फाल्गुणे धान्य महर्घता ॥

२४—सर्वरी २४ भौमस्वामी-प्रजाप्रलय अल्पवर्षा राज्ञां विरोधः चैत्रादिमास ३ अन्न समता आषाढ़द्वये महामेघः परं खंडवृष्टिः अन्न समर्घता भाद्रपदे वर्षा नास्ति राजपीड़ा लोकेषु आश्विने रोगपीड़ा अन्न कलशिका प्रति फदिया १० बाण कैर्लभ्यंते पश्चिमायां दुर्भिक्षं पूर्वस्यां सुभिक्षं कार्तिकादिमास २ अन्न महर्घं पौष्यादिमास ३ धान्यसमर्घ ॥

२५—प्लव २५ बुधस्वामी-वर्षाकाले वर्षावहुला उत्तमः समयः चैत्रेधान्य मंदता वैशाखे भूमि भयंकरी ज्येष्ठे अन्न समर्घता तैलंगे पूर्व देशे पीड़ा आषाढ़े महावायुः उत्पात लोका सरोगाः श्रावणे महान्मेघो दिन २७ वर्षा भाद्रपदेश्वनो घनागमःधान्यं समर्घ कणकलशिका ११ फदिया नाणकैरष्टभिर्लभ्यते आश्विने सर्व वस्तु सर्वधातु समर्घता गोधूमानां महर्घता कार्तिके

अन्न समर्घ लोक सुखी मंडपांचालो विग्रहः पोषादि मास ३ अति सुभिक्षं राजराज्यं आनन्दम् ॥

३६—शुभकृत् ३६ गुरुस्वामी-अति वर्षा राजाप्रजा सुखेन वर्तते उत्तरापथे वह्नि भयं चैत्र वैशाषे समर्घता धातु समर्घता श्रावणो ९ तिथितो वर्षा अन्न समर्घता भाद्रपदे महान्मेघः वह्निभयं अन्न कलशिका एकाफदिया नाणके रष्टभिः घृत तैलं समर्घ कार्तिकादि मास ३ युगंधरी गोधूम चणक तिल मुद्ग तंदुला इत्यादि अन्न समर्घ राज्ञां परस्पर विरोधः ज्येष्ठादि मासेषु सर्व वस्तु समर्घ फाल्गुणे किंचिदुत्पातः मरु देशे रोगः परं सुभिक्षं ॥ ३६ ॥

३७—शोभन ३७ शुक्र स्वामी-राज्ञां प्रजानांच सुखम् अति वर्षा चैत्रादिमास २ धान्यं समर्घ राजा विग्रहः किंचिदुत्पात आषाढ़े अल्पमेघः श्रावणे अति वर्षा परंलोक पीड़ा भाद्रपदे महान्मेघः आश्विने सुभिक्षं ततो अति किंचिद्विग्रहः ॥

३८—क्रोधी ३८ शनिस्वामी-द्वादशमासान् अन्न महर्घ मध्यमः समयः राज्ञां परस्पर विरोध प्रजायां परलोको निर्धनः व्यापारी नां चैत्र वैशाषे कर्कापातः रोगभारी भयं ज्येष्ठे धान्यं महर्घं आषाढ़े समता अल्पो मेघः श्रावणे रौरवं भाद्रपदे खंड वृष्टिः अन्नं महर्घं अश्विने मेघ वर्षा सर्वत्र रसकस वस्तु समता अन्न वस्तु सर्व समर्घ कार्तिके समता ॥

३९-विश्वावसु ३९ राहुस्वामी-वर्षा समता अन्न महर्घता चैत्रे राज्ञां विरोधः धान्यं महर्घं वैशाषे मंडपदुर्गे विग्रहः अन्नस्य ४५ फदिया नाणके रेकाकलशिका अन्यत्रदेशे सुभिक्षं

अश्विने रोगपीड़ा रोग बाहुल्यं गो महिषी घोटक अजा महर्घतो सुवर्णादि धातु महर्घता कार्तिकादि मास ३समर्घता कण कलशिं का एक फदिया ॥

४०-पराभव ४० केतु स्वामी-द्वादशमास वर्षा मध्यम वृष्टिः चैत्रे वैशाषे अन्न महर्घ मेघ गर्जते ज्येष्ठे धान्य संगृह उदुदंड वायुः आषाढ़े अल्पमेघः अन्ने द्विगुणलाभः श्रावणे महतीवर्षा अन्न समता भाद्रपदे खंड वृष्टिः परंदुर्भिक्षं अश्विने किंचिल्लोक सुखं परं धान्य रसवस्तु महर्घता धातु समर्घताकार्तिकादि मास५ समता पश्चिमायां अन्न समता सिंधुदेशाद्धान्यागमःइति मध्यम विंशति फलम् ॥

४१—प्लवंग ४१ ब्रह्मा स्वामी—चैत्रे वैशाषे महर्घता ज्येष्ठ मध्ये राजा पीडा आषाढ़े अल्पमेघः भूमिकंपः हस्तिपीडातुरंगम् महर्घता श्रावणे महामेघः भाद्रपदे ८ सीतो महामेघः अश्विने रोगः रस महर्घता फाल्गुणे कण कलशिका एक फदिया १० प्रमाणौ अश्व महिषी तथा लोक पीडा ॥

४२—कीलक ४२ विष्णुस्वामी—वर्षामध्यमः चैत्रेधान्य महर्घ वैशाषेरोगः मरुदेशे दुर्भिक्षं पश्चिमायां समर्घता ज्येष्ठे धान्य संग्रह आषाढ़े श्रावणे अल्पमेघः अन्यसमर्घ धान्येद्विगुणोलाभः भाद्रपदे अष्टम्यांमेघः आश्विनेवर्षा अन्नमहर्घ राजधानी नगरे उद्वसता रोगा बहुला गोधूमा महंघः सर्वधान्य व रसः समर्घाघृते एक मणं प्रति फदिया ५०० कार्तिकादि मास ३ समर्घता माघे अन्न महर्घ रोगपीड़ा महती फाल्गुणे राजा राज्य सुस्थः प्रजा सौख्यं अन्नसमताः ॥

४३—सौम्य ४३ रुद्रस्वामी—अल्पमेघः गावःअल्पक्षीराः वृक्षे अल्पफलम् चैत्रे महर्घता वैशाखे उद्दंडवायुः ज्येष्ठेविग्रहः प्रजा पीड़ा आषाढ़ेअल्पमेघः अन्नं महर्घं श्रावणे महामेघः धान्यं द्विगुणो लाभः गोधूमानां कलशिका एकाप्रतिफदिया ५० प्रमाणं लभ्यते सर्वधान्यसमता रसमहर्घता भाद्रे खंडवृष्टिः अन्नं दुर्भिक्षं आश्विने राजाविरोधः लोकपीड़ा मार्गे विषमता अन्ने संग्रहः धान्ये द्विगुणोलाभः सर्वरसधातु समर्घता कार्तिकादि मास ४ तेषुसमता परराज्य विद्वरं बालक रोगः देशाउद्वस्ता देशांतरीय लोकपीड़ा फाल्गुणे उद्दंडवायु पश्चिमायां सुभिक्षंसिंधु देशे राजविरोधः अन्नं समर्घता ॥

४४—साधारण ४४ रविस्वामी—चैत्रेधान्य मंदता वैशाखे ज्येष्ठे उत्पातः भूमिकंपः रोग वृद्धिः राजाविरोधः धान्यमहर्घता आषाढ़े वायुदंड रौरवं क्वचिदल्पमेघः श्रावणेमहती वर्षा अन्न समताभाद्रपदे अल्पमेघः आश्विने अल्पधान्य निष्पत्तिः कार्ति कादि मास २ मध्यमारिष्टं भूमिकंपः अकस्माद्राज विग्रहः अन्न महर्घता सर्वरस संग्रह परं राजासुखी ॥

४५—विरोधकृत४५चन्द्रस्वामी—पंडपाल दुर्गविग्रहः कोकण देशे मेदपाट मंडले मध्यदेशेमहा रौरवं परस्परं राजविग्रहः मार्गे विषमः चैत्रादि मास ३ अन्नसमता आषाढ़ेअल्पमेघः श्रावणे महा वर्षा अन्न समर्घता भाद्रपदे मेघः अन्नसमता सर्व धातु महर्घता फाल्गुणे देशविरोधः मार्गे वैषम्यं 'मंजिष्ठा सोपारिका पट्टसूत्रं दंतमद्वस्तु तुरंगमादिमहर्घता ॥

४६—परिधावी ४६ भौमस्वामी-दुर्भिक्षं नागपुरे मेद पाटे

जालंधरदेशेराज्ञांविरोधःचैत्रादि ४ मास अन्नसमता तत्रसंगूहः कार्य्यांःलोके रोगभयंचतुष्पद महिषी तुरंगहस्तीनां पीड़ा श्रावणे भाद्रपदेअल्पमेघःखंडवृष्टिःअन्नमहर्घनासर्वरसमहर्घतासर्वेधातवः समर्घाः कार्तिकादि मास ५ धान्यसमता राजा विड्वरं सिंधुदेशाद्धान्यागमः ॥

४७—प्रमाथने ४७ बुधस्वामी—कोकणदेशे दुर्भिक्षं विगृहः चैत्रे धान्य समता वैशाषज्येष्ठयोर्धान्यंसंगृहः आषाढ़े नवीनमुद्रा परं अल्पमेघः श्रावणस्यार्द्धे मेघ वर्षा अन्नमहर्घं धान्ये त्रिगुणो लाभः भाद्रपदे महामेघः अन्नसमर्घं आश्विनादि मास ६ सुभिक्षं सर्वरस महर्घता लोकः सुखी गुरुणां पूजा महिष वृद्धिः राजाधर्म्माः॥

४८—आनंद गुरुस्वामी—वर्षा बहुला सुभिक्षं चैत्रवैशाष अन्नसमर्घं ज्येष्ठाषाढ़योर्मध्यमवृष्टिःपर नवीनमुद्राजायतेश्रावणे महामेघः भाद्रपदे खंडवृष्टिः गोधूमा महर्घता आश्विने समर्घा रस अन्नवस्तु समताधातु महर्घता कार्तिके अकस्माद्भयं लोक पीड़ा मार्गशीर्षे लोकानां दक्षिणदिशि गमनं पौष्य माघे मेघ वर्षा अन्न समर्घं फाल्गुणे धान्य महर्घं ॥

४९—राक्षस ४९ भृगुस्वामी—धान्यसंगृहः कार्यः चैत्रे करका पतंति वैशाषे ज्येष्ठ तैल महर्घं ज्येष्ठे आषाढ़े गुड़ शर्करा द्रव्यं महर्घं श्रावणेद्वय अल्पमेघः अन्न महर्घता आश्विने समता कार्तिके रोगार्तिः मार्गशीर्षादि मास ४ धान्य समर्घता राजा सुखी प्रजाराजा मान्या फाल्गुणे समर्घता वृक्षाः नवपल्लवा मार्गे सुखे सुभिक्षं ॥

५०—नल ५० शनिस्वामी—अल्पमेघपरं समर्घ चैत्रेरोग पीड़ा वारिदं बहुला वायुः प्रबला वैशाषे अरिष्टअन्नसंगूहः कार्यःज्येष्ठे राज्ञांपरस्परं विरोधः लोकमार्गे वैषम्यं कचित् आषाढ़े संगूह कार्यो कार्तिकेविक्रयः मार्गशीर्षादिमास २ अन्नसमताफाल्गुणे बालानां रोगः तस्करेभयं उत्तरादेशे दुःकालः पूर्वस्याम् दुर्भिक्षम्॥

५१—पिंगल ५१ राहुस्वामी-उच्चमुलतान नागपुर मरु दिल्ली मंडलेषु मथुरायां पूर्वे देशेषु दुर्भिक्षं सर्वधातु अन्नं वा समर्घ परं सर्वत्रविगूहः नगरे त्रास गूामानां उद्वसतं ५०० रोग पीड़ा राजा सुस्थं प्रजासुखं अन्न समता गुर्जरदेशे समर्घता सिंधु देशे धन्यागमः चैत्रे धान्य महर्घता प्रजापीड़ा वैशाषादि मास ३ अन्न समर्घता प्रजाक्षयः अश्वपीड़ा आषाढ़े श्रावणे अल्प मेघः धान्ये चतुर्गुणो लाभः भाद्रे खंडवृष्टिः आश्विने समता कार्तिक मास ५ विगूहः पीड़ा अन्न महर्घता चतुष्पद रोगः॥

५२-कालयुक्त ५२ कालवत्सरे ५२ केतुस्वामी अल्पमेघः देशे उद्वसनं अल्प व्यापारः राजविगूहः चैत्रे वैशाषेच अति अरिष्टं उत्तरापथदेशभंगः ज्येष्ठ धान्य संगूहः धान्येषट्गुणो लाभः आषाढ़े अल्पमेघः लोके सुखं मार्गे विषमता श्रावणे महान्मेघः अन्न समता भाद्रपदे खंडवृष्टि धान्यं दुर्भिक्षं उत्पातः आश्विने रोग शीतलादि विकारः धान्य फदिया ७५ नाणकैः कलशिका एका लभ्यंते सर्वरस महर्घता सर्वधात समर्घता कार्तिके मास पंचके यावत परराज विड्वरं अश्व चतुष्पदपीड़ा॥

५३-सिद्धार्थ ५३ रविस्वामी-सुभिक्ष सर्वे देशे वसति बहुला अन्न विक्रयः चैत्रे वैशाषे लोक पीड़ा ज्येष्ठाषाढ़यो उदंडवायुः

श्रावणेदिन १ महावर्षा सर्वान्न महर्घता भाद्रपदे खंडवृष्टिः आश्विने अन्न समता कार्तिके धान्य निष्पत्तिः बहुला अन्न समर्घता सर्वधातु समता मार्गादिमास ४ अनंतरं सर्वत्र ग्राहकता उत्पातः क्वचिद्राज विरोधः लोक विग्रहः अश्व मूल्य महर्घता ॥

५४-रौद्र ५४ चन्द्रस्वामी-पृथिव्यां विरोध बाहुल्यं चतुष्पद नाशः क्षत्रभंगः स्वदेशे ग्रामभंगाः अल्पमेघः चैत्रादि मास ३ अन्न महर्घ आषाढ़ श्रावणे अल्पमेघः खंडवृष्टिः भाद्रपदे महान्मेघः अन्न समर्घता अन्यद्वस्तु मंजिष्ठा सोपारिका लवंग महर्घता लोक सुखी चतुष्पद समर्घता हस्तीनां पीड़ा ॥

५५-दुर्मति ५५ भौमस्वामी-चैत्रे वैशाखेन धान्य समर्घ ज्येष्ठे अन्न समता आषाढ़े उदंडवायुः श्रावणे अल्पमेघ कण कलशिका फदिया ३५ प्रमाणेनलभ्यते सर्वधातवः समर्घता लभ्यंते आश्विने सर्वरस समर्घता धान्य समता कार्तिकादि मास २ यावत् सर्ववस्तु समता राजास्वस्थः ग्रामे ग्रामे नवीन वसति सर्वलोक सुखी अश्व महर्घता चतुष्पद ३२ महर्घता पौषादि मास ३ यावत् सर्वधातु समर्घता ॥

५६-दुंदुभी ५६ बुधस्वामी-वर्षा बहुला अन्न समर्घता रस कस वस्तु समर्घता चैत्रादि मास ३ अन्न समर्घता आषाढ़े द्विगुणो लाभः अल्पमेघः श्रावणे दिन ११ महावृष्टिः भाद्रपदे मेघ दिन ९ वर्षति अन्नं समर्घ देशा नवीना वसति आश्विने अन्न समर्घ रोगाः बहुला-मंजिष्ठा मरीचानां समर्घता सर्वरस सर्वधातु समर्घः कार्तिके धान्यं समर्घ अन्न दुर्भिक्षं पश्चिमायां शुभम् मार्गशीर्षे समर्घता राज्ञांपरस्पर विरोधः लोका देशांतरंयांति

पौषादि मास २ समता अश्व वा मंजिष्ठा महर्घा ॥ ❀ ❀ ❀

५७- रुधिरोद्गारी ५७ गुरुस्वामी-राज्ञां परस्पर विरोधः लोके देशान्तरयांति दुर्भिक्षं द्विज पीड़ा जीवादि दुःखं म्लेच्छ राज्यं परदेशात् धान्या मायात् आषाढ़े शुक्लपक्षे महामेघः श्रावणे दिन १५ महावर्षा चैत्रादि मास २ समर्घता धातवः समर्घः उत्तरापथे उच्चमुलतान तिल तैलंगे गौड़े मोठ एषुदेशेषु दुर्भिक्षं पश्चिमायां सुभिक्षं सिंधुदेशे धान्य निष्पत्तिः भाद्रपदे खंड-वृष्टिः धान्ये त्रिगुणो लाभः आश्विने समताः रोगः बालकः कार्तिकादि मास ५ अन्नं समर्घं मेदपाटे लोक पीड़ा॥

५८-रक्ताक्ष ५८ शुक्र स्वामी-अन्न समर्घं मेदपाटे वृक्षे महा-मेघः आषाढ़े महती जल वृष्टिः सुराष्ट्रायां ग्रामे प्रवाहकः अन्नं समर्घं श्रावणे अल्पमेघः किंचिद्विग्रह भाद्रपदे अल्पवर्षा रोग पीड़ा आश्विने अन्न समर्घं कार्तिकादि मास ५ धान्यं महर्घं विवाहादिकं नास्ति अश्व पीड़ा पश्चिमायां शुभम्॥

५९—क्रोधन ५९ शनिस्वामी-सेना बहुला मंदवृष्टिः प्रजा पीड़ा उत्तरापथे दुःकालः लोका निर्धनाः चैत्रे वैशाखे अल्पमेघः अन्न समर्घता ज्येष्ठे मंद रोग पीड़ा अन्नसमता आषाढ़ श्रावणे अल्पवर्षा धान्ये त्रिगुणो लाभः भाद्रपदे मेघः अन्नसमर्घं आश्विने रोग पीड़ा कार्तिके विग्रहः धान्य समर्घं मार्गशीर्षे धान्य समता अकस्मादुत्पातः पौषेसमर्घता वणिक पीडा धान्ये द्विगुणो लाभः अन्यवस्तु समर्घं॥

६०—क्षयः ६० राहुस्वामी- चैत्रे काकापातः वैशाखे उत्पातः भूमिकंपः ज्येष्ठाषाढ़यो रोगबालकः नवीन मुद्रा उदयः अल्पमेघः

अन्नसमर्घता भाद्रपदे खंडवृष्टिः चतुष्पदहानिः फदिया ५० नाणके धान्य कलशिका एका आश्विने रोगः परं अन्न समर्घं सर्वधातु समता मध्यमः समयः राजविरोधः पश्चिमायां सुभिक्षं अन्नसमर्घं सिंधु देशात्स्थलदेशाद्वा अन्नागमः पूर्वस्यां विड्वरं अन्न समता६०

इतिकश्यप संहितायां संवत्सर फलम् समाप्तम् ॥

अथ सम्वत्सर फलान्याह कश्यपः ॥

१ इनयश्चाग्निकोपश्च व्याधयःप्रचुरोभुवि ॥ प्रभयाब्दे मन्दवृष्टिश्च तथापिसुखिनोजनाः ॥ १ ॥ दंडनातिपराभूया बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ विभवाब्देखिलालोकः सुखिनस्युर्विवैरिणाः ॥ २ ॥ शुक्लाब्देनिखिलालोकाः सुखिनःसुजनैःसह ॥ राजानोयुद्धं निरताः परस्परंजवैषिणः ॥ ३ ॥ प्रमोदाब्देप्रमोदंते राजानोनिखिलाजनाः ॥ वीतरोगावीतभया इतिवैरिविवर्जिता ॥ ४ ॥ नचलंत्यखिलालोकाः स्वस्वमार्गात्कथंचन ॥ अब्देप्रजायतोनूनं बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ ५ ॥ अन्नाद्यंभुजतेशश्वज्जनैरतिथिभिःसहः ॥ अंगिराब्देखिला लोकाः भूपाश्चकलहोत्सुकाः ॥ ६ ॥ श्रीमुखाब्देखिलाधात्री बहुसस्यार्घसंयुता ॥ अध्वरेनिरताविप्रा वीतरोगविवैरिणः ॥ ७ ॥ भावाब्देप्रचुरारोगा मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ राजानोयुद्धंनिरतास्तथापि सुखिनोजनाः ॥ ८ ॥ प्रभूतपयसोगावः सुखिनः सर्वजंतवः ॥ सर्वकामक्रियासक्ते युवाब्देयुवतीजनः ॥ ९ ॥ धात्रिवर्षेखिलाक्ष्मेशाः सदायुद्धपरायणः ॥ संपूर्णाधरणीभीत बहुसस्यार्घवृष्टया ॥ १० ॥ धात्रीधात्रीवसर्वदा ॥ पोपयक्मतुलं चान्नं फलंमासेत्रिव्रीहिभिः ॥ ११ ॥ अनीतिर्वन्हिवृष्टिः

बहुधान्याख्यवत्सरे ॥ विविधैर्धान्यनिचयैः सं... ॥ १२ ॥ नमुंचंतिवयोवाहः कुत्रचित्कुत्रचिज्जलं ॥ मध्यमा वृष्टिरर्घश्च नूनमब्दप्रमाथिनी ॥ १३ ॥ विक्रमाब्देधराधीशा विक्रमाक्रांतभूतयः ॥ सर्वत्रसर्वदामेघ मुंचंतिप्रचुरंजलं ॥ १४ ॥ वृषाब्देनिखिलाक्ष्मे शायुध्यंतिवृषभोत्त्व ॥ विद्यः प्रशक्ताविप्रेंद्राजयते सततंसुरान् ॥ १५ ॥ चित्रार्धवृष्टि सस्याद्यै विचित्रनिखिलाधरा ॥ निराकुलाखिलालोकाश्चित्रभानो श्चवत्सरो ॥ १६ ॥ सुभानुवत्सरेभूपौ भूमियानांचविग्रहः ॥ भातिभूर्भूरिसस्याढ्यं भयंकारभुजंगमाः ॥ १७ ॥ कथंचि-न्निखिलालोका स्तरंनिप्रतिपत्रतां ॥ नृपाहवक्षताद्रोगाब्धेषज्यै स्तारणब्दे ॥ १८ ॥ पार्थिवाब्देतुराजानः सुखिनःसुप्रजाभृशं ॥ बहुभिफलपुष्पाद्यैर्विविधैश्चपयोधरैः ॥ १९ ॥ व्ययाब्दे निखिलालोका बहुव्ययपराभृशं ॥ वीरमत्तेभतुरंगैरथैर्भूपतिसर्वदा ॥ ॥ २० ॥ सर्वजिद्वत्सरेसर्वे जनास्त्रिदशसन्निभः ॥ राजानोविलयं यांति भीमसंग्रामभूमिषु ॥ २१॥ सर्वधार्याब्दकेभूपाः प्रजापालन तत्परा ॥ प्रशांतवैरासर्वत्र बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ २२ ॥ विरोधी वत्सरेभूपाःपरस्परविरोधिनः ॥ भूरिभूवियुता भूमिर्भूरिवारिसमा कुला २३ प्रकृतिर्विकृतिंयातिविकृतिः प्रकृतिंतथा ॥ तथापिसुखिनो लोकाः भृशविकृतिवत्सरं ॥ २४ ॥ खराब्दे निखिलालोकाः अन्यो न्यंसमरोत्सुकाः ॥ मध्यमावृष्टिरत्युग्ररोगैर्भूपालयंययुः ॥ २५ ॥ नंदनाब्देसदापृथ्वीबहुसस्यार्घ वृष्टयः ॥ आनंदोप्यखिलानातं जंतूनांसमहीभुजाम् ॥ २६ ॥ विजयाब्देतुराजानःजयसंघोष तत्पराः ॥ सुनदंतिप्रजासर्वेबहुसस्यार्घ वृष्टयः ॥ २७ ॥ जय

मंगलघोषाद्यैर्वाणीभीतिर्सर्वदा ॥ जयाद्धरणीनाथः संग्राम जयकांक्षिणः ॥ २८ ॥ मन्मथाब्दे प्रजाःसर्वे तस्कारात्प्रति लोलुपाः॥शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवाधराः॥ २९ ॥ दुर्मुखाब्दे मध्यवृष्टि रितिचौराकुलाधराः ॥ महावैरामहीनाथः वीरवारिण वाजिभिः ॥ ३० ॥ आकुलहेमलंबेतु मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ भाति भूर्भूपतिक्षोभव्र ह्रविद्युल्लतादिभिः ॥ ३१ ॥ विलंबिवत्सरेभूपाः परस्पर विरोधिनः ॥ प्रजापीड़ाअनर्घ्यत्वं तथापिसुखिनोजनाः ॥ ३२ ॥ विकार्यब्देखिलालोकाः सरोगावृष्टिपीड़िता ॥ पूर्वसस्यफलंस्वल्पं बहुरंचापरंफलम् ॥ ३३ ॥ शर्वरीवत्सरेपूर्णा धरासस्यार्घवृष्टिभिः ॥ जनाश्चसुखिनःसर्वे राजानस्त्वविवैरिणः ॥ ३४ ॥ प्लवाब्देनि खिलाधात्री वृष्टिभिःप्लवसन्निभाः ॥ रोगकालान्वीतिभीतिः संपूर्णवत्सरेफलम् ॥ ३५ ॥ शुभकृद्वत्सरेपृथ्वी संपूर्णविविधो त्सवैः ॥ आतंकचौराभयदा राजानःसमरोत्सुकाः ॥ ३६ ॥ शोभकृद्वत्सरेधात्री प्रजानांरोगशोकदा ॥ तथापिसुखिनाः लोकाः बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ ३७ ॥ क्रोधाब्देनिखिलालोकाः क्रोधलोभपरायणाः॥ इतिदोषैसासततं मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ ३८ ॥ अब्दोविश्वावसोसेश्वद् घोररोगाधरानराः ॥ सस्यार्घवृष्टयोमध्या भूपालानातिभूतयः ॥३९॥पराभवाब्देराज्ञस्यात्समरं सहशत्रुभिः॥ आमयःक्षुद्रसस्यानि प्रभूतान्यल्पवृष्टयः॥ ४० ॥ प्लवंगाब्देमध्यवृष्टि रोगाचौराकुलाधराः ॥ अन्योन्यसमरेभूपो शत्रुभिर्हतभूमयः ॥४१॥ कीलकाब्देसीतिभीतिः प्रजाक्षोभनृपाहवौ ॥ तथापिवर्धतेलोकाः समधान्यार्घवृष्टिभिः ॥४२॥ सौम्याब्देनिखिलालोकाः बहुसस्यार्घ वृष्टिभिः ॥ विवैरिणोधरावीशा विप्राश्चाधर्मतत्पराः ॥ ४३ ॥

साधारणाब्दे वृष्टयर्घं भयंसाधारणंमतम् ॥ मध्यसयंद्धराधीशाः प्रजास्युःस्वस्थचेतसाः ॥ ४४ ॥ विरोधकृद्वत्सरेतु परस्पर विरोधिनः॥सर्वे जनानृपाश्चैव मध्य सस्यार्घवृष्टयः ॥ ४५ ॥ भूपा हवोमहारोगो मध्यसस्यार्घ वृष्टयः ॥ दुःखिनोजंतवःसर्वे वत्सरे परिधावनी ॥ ४६ ॥ प्रमाथीवत्सरे तत्र मध्य सस्यर्घ वृष्टयः ॥ प्रजा कथंचिज्जीवंति समात्सर्वीक्षितश्विराः ॥ ४७ ॥ आनंदाब्दखिला लोका सर्वदानन्दचेतसः ॥ राजानःसुखिनःसर्वे वत्सरेमेदनी शिवे ॥ ४८ ॥ राक्षसाब्देखिलालोका राक्षसाइवनिक्रयाः ॥ इन्द्रोपिन जलंदद्यात् सुभिक्षं नैव जायते ॥ ४९ ॥ नलाब्दे मध्य सस्यार्घं वृष्टिभिःप्रचराधराः ॥ नृपंसक्षोभसंजाता भूरितस्कर भीतयः ॥ ५० ॥ पिंगलाब्देत्वीतिभीतिर्मध्य सस्यार्घवृष्टयः ॥ राजानोविक्रमक्रांता भुज्यंतेशत्रुमेदनी ॥ ५१ ॥ वत्सरेकाल युक्तारूये सुखिनःसर्वजंतवः ॥ संतीततोपिसस्योनि प्रचुराणि तथागदाः ॥५२ ॥ सिद्धार्थीवत्सरेभूपा शांतवैरस तथाप्रजाः ॥ सकलावसुधाभाति वहुसस्यार्घ वृष्टिभिः ॥ ५३ ॥ रौद्राब्देनृप संभूत संक्षोभ क्लेशभागिनः ॥ सततंत्वखिलालोका मध्यसस्यार्घ वृष्टयः ॥ ५४ ॥ दुर्मत्याब्देखिलाभूपा लोकदुर्मतयःसदा ॥ तथापिसुखिनःसर्वे सग्रामाः संतिचेदपि ॥ ५५ ॥ सर्वसस्य युताधात्री पालिताधरणीधरैः ॥ पूर्वदेशादिनासस्यात्तत्रदुंदुभि वत्सरे ॥ ५६ ॥ अहिवेचनिताःसर्वे भूपारोगैस्तथाजनाः ॥ यथा कथंचिज्जीवंति रुधिरोद्गारिवत्सरे ॥ ५७ ॥ रक्ताक्षीवत्सेर सस्य वृद्धिर्वृष्टिरनुतमाः॥प्रेक्षंतेसर्वदान्योन्यं राजानोरक्तलोचनः ५८ ॥ क्रोधनाब्दे मध्यवृष्टिः पूर्वदेशे विशेषतः ॥ संपूर्ण निरताःसर्वे

भूपाः क्रोधपरायणाः ॥ ५९ ॥ कार्पासंगंधतैलेक्षु मधुसस्य विनाशनं ॥ क्षीयमाणाश्चापिनरा जीवंतिक्षयवत्सरे ॥ ६० ॥ इति ॥

संवत्सरमध्येराजादिज्ञानम् ॥

संवत्के आदिमें (चैत्रशुक्ल १ को) जो बार हो वह संवत् का राजा होताहै मेषकी संक्रांतिको जो बार होय सो मंत्री होता है वृषकी संक्रांति को जो बार होय सो कोषाधिप होता है मिथुन की संक्रांति अथवा आर्द्रेऽर्कः जिस बारको होय सो मेघाधिप होताहै इत्यादि चक्रसे जानना चाहिये ॥

वर्षे राजादीनां संक्षेपात्फलम् ॥

गुरु वा शुक्र वा चंद्रमा राजादि होवें तो मनुष्यों को सुखदेनेवालेहैं वर्षा अच्छी सुभिक्ष होवे तथा देश स्वास्थ्य भी करै और जो शनिश्चर मंगल राजादि होंय तो दुर्भिक्ष विग्रह करैं ॥ बुध राजादि होय तो सुख थोड़ाकरै और सूर्य राजादि होंय तो दुःख होय तथा विशेष फल आगे लिखेंगे अब पहिले राजादि ज्ञान के लिये चक्र लिखते हैं॥

राजा	मंत्री	कोशाधिपः	मेघेश तथा धुर्याधिप	सस्येशः	दुर्गेशतथा सैन्याधिप	धनेश तथा अन्नाधिप	रसेश	आज्ञाधिपः	धान्येश	नीरसेश	व्यवहाराधिपः	फलेशतथाऽथ पापाधिप	जोबार होयसोसंवत्सरस्यराजादिहोताहै व.प्र.
चै शु-प्रतिप	मेष	वृष	मि-आर्द्रा-र्क	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन	संक्रान्ति

अगर चैत्राधिक मास होवैं तो प्रथम चैत्र शुक्ल १ को जो वार होवै वह राजा होताहै और दूसरे चैत्र शुक्ल १को नवरात्रारम्भादि होताहै इसका निर्णय शारदीय नवरात्र प्रमाणसेहै ॥

वर्षेराजादीनां विशेषफलंतत्रादौराजाफलम् ॥

सूर्येनृपेस्वल्पफलाश्चमेघः स्वल्पंपयोगोषुजनेषुपीड़ा ॥
स्वल्पंसुधान्यंफलस्वल्प वृक्षाश्चौराग्निबाधानिधनंनृपानाम् १ ॥
चन्द्रेनृपेमंगलशोभनानि प्रभूतिवृष्टिःप्रचुरंचधान्यम ॥
सौख्यंजनानांमुदयोनृपाणां प्रशाम्यतिव्याधिजरानराणाम्॥२॥
भौमेनृपेवन्हिभयंजनक्षयं चौराकुलंपार्थिवविग्रहंच ॥
दुःखंप्रजाव्याधिवियोगपीडा स्वल्पंपयोमुंचतिवारिवाहा ॥ ३ ॥
बुधस्यराज्येसजलंमहीतलं गृहेगृहेतुर्यविवाहमंडलम् ॥
प्रकुर्वतेदानदयाजनोपिस्वस्थं सुभिक्षंधनधान्यसमाकुलम् ॥४॥
गुरौनृपेवर्षतिकामदंजलं महीतलेकामदुधाश्चधेनवः ॥
यजन्तिविप्रावहवोग्निहोत्रिणो महोत्सवंसर्वजनेषुवर्तते ॥ ५ ॥
शुक्रस्यराज्येवहुसस्यसंकुला स्वतीव्रवेगासरितोंवुराशिभिः ॥
फलंतिवृक्षावहुगोप्रसूतिर्वसुंधरा पार्थिवसौख्यसंयुता ॥ ६ ॥
शनैश्चरेभूमिपतौसकृज्जलं प्रभूतरोगैपरिपीडयतेजनाः ॥
युद्धंनृपाणांगदतस्तुराधे भ्रमंतिलोकाक्षुधिताश्चदेशात् ॥ ७ ॥

इतिराजाफलम् ॥

अथमंत्रीफलम् ॥

नृपभयंगदतोपिहतस्करा प्रचुरधान्यधनादिमहीतले ॥
रसचयंहिसमर्घतमंदतारविरमात्यचदांहिसमागतः ॥ १ ॥
शशिनिमंत्रिगतेवहुसस्ययत्यपिधरारमतेसुखमण्डिता ॥
विपतिवारिधरावहुवर्षिणोजनपदाःसुखराशिसुशोभिताः ॥ २ ॥
अवनियोननुमंत्रिपदंगतोभवतिदस्युगदादिजवेदना ॥

जनपदेषुजयंसुखसंचयंनबहुगोषुपयोद्विजकर्मच ॥ ३ ॥
शशिसुतेशुभमंत्रिसमागतेस्वपतिनारिमतेमदनक्रियां ॥
बहुधनंबहुवारिसमन्वितंयवमसूरिचशान्नमहर्घता ॥ ४ ॥
विविधधान्ययुताखलुमेदिनीप्रचुरतोयघनामुदितोभवेत् ॥
नृपतयोजनपालनतत्परासुरगुरौननुमंत्रिसमागते ॥ ५ ॥
भृगुसुतेननुमंत्रियदंगतेशलभमूषकराविषमाहिषैः ॥
भवतिधान्यसमर्घतयामम्ंजनपदेषुजलंसरिताधिकम् ॥ ६ ॥
रविसुतेयदिमंत्रिणिपार्थिवाविनयसंरहिताबहुदुःखदाः ॥
नजलताजलताजनतापदाजनपदेषुसुखंधनदंक्कचित् ॥ ७ ॥

इतिमंत्रीफलम् ॥

अथसस्येशफलम् ॥

सस्याधिनाथेतरणौहिपूर्वं धान्यंसमर्घंबहवोपिचौराः ॥
युद्धंनृपाणांजलदाजलाढ्याः स्वल्पंचसस्यंबहुभूरुहाश्च ॥ १ ॥
सस्याधिपेशीतकरेप्रजासुखं मेघाःप्रथेमुंचतिगोयगोधुक् ॥
देवद्विजाराधनतत्परानृपा धराभवेधान्यघनौघपूर्णा ॥ २ ॥
प्रथमधान्यपतौधरणीपतौ गजतुरंगखरोष्ट्रगवामपि ॥ प्रभव
दावहुरोगघनोजलंनसमसौख्यकरंतुपधान्यहृत् ॥ ३ ॥ जल
धराजलराशिमुचोभृशं सुखसमृद्धियुतंनिरुपद्रवम् ॥ द्विजगण
स्तुति पाठकराःसदा प्रथमसस्यपतौसतिबोधने ॥ ४ ॥ सस्य
पतौसुरराजपुरोहितेसकलसौख्यकराःश्रुतिपूर्वकाः ॥ जलधरा
जलदावहुसस्यदारसपयांसिवहूनिवसूनिवै ॥ ५ ॥ शुक्रोयदा
धान्यपतिःधरायांमेघाजलंवर्षतिशोभनमियम् ॥ गोधूमशालेक्षु

घनप्रियंगुवृक्षेषुपुष्पानिसुखप्रदानि ॥ ६ ॥ रविसुतेयदिधान्यपतौजनौनृपतिभिःपरिपीडितविगृहः ॥ गदभयंतुषधान्यहरंसदा दुरितवादविवादयुतानराः ॥ ७ ॥ इतिसस्येश फलम् ॥

अथधान्येशफलम् ॥

पश्चाद्धान्याधिपेसूर्ये पश्चाद्धान्यंतदानहि ॥ विगृहं भूभृतांधान्यं महर्घंज्वरपीडनम् ॥ १ ॥ चन्द्रेधान्याधिपेजात प्रजावृद्धिप्रजायते ॥ गोधूमासर्षपाश्चैव गोषुक्षीरंतथावहुः ॥ २ ॥ भूमिजेग्रीष्मधान्येशे ग्रीष्मधान्यमहर्घकम् ॥ शालीक्षुघृततैलादि महर्घाणिभवंतिच ॥ ३ ॥ बुधेधान्याधिपेमेघाः जलंमुंचित वैभृशं ॥ सैंधवेलाटदेशेच माधवोल्पंचवर्षति ॥ ४ ॥ गुरौ धान्यपतौयाति यवगोधूमशालयः ॥ पच्यंतेसर्वदेशेषु यज्वान ब्रह्मवादिनः ॥ ५ ॥ भृगौपश्चिमधान्येशे पश्चाद्धान्यंनपश्यते सस्यासमर्घतोयांति स्वल्पंक्षीरंगवामपि ॥ ६ ॥ दुर्भिक्षंजायतेतत्र कलहंदेशविगृहम्॥सौराष्ट्रदेशनष्टश्च यत्रधान्याधिपोशनिः॥७॥ इति

अथमेघेशफलम् ॥

जलदयेयदिवासरपेतदासरसिवैरमतेजनतारसप बचनेक्षुतिवारसुशालिभिः सुखचयंसुलभंभुविवर्त्तते ॥ १ ॥ शशिनियोयदये यदिगोमहिष्यजवरादिषुदुग्धरसंतदा ॥ फलवतीधनधान्यवतीधरोविविधभोगवतीननुभाविनी ॥ २ ॥ अवनिजेजलदस्य पतौभुविश्रुतिविचारविहीनधराभवाः ॥ कुचिदपिप्रचुरंजल मल्पकं कुचिदवप्रचुरंवहुतापदम् ॥ ३ ॥ अमृतरश्मिसुतेयदि वारिपेवहुजलंतुषधान्यरसादिकम् ॥ द्विजवरायजनोत्सुकचेतसा

विविधसौख्ययुताधरणीतदा ॥ ४ ॥ गुरुविप्रियदृष्टिकरःसदा खिलविलाशवतीधरणीतदा ॥ श्रुतिविचारपरानरपालका रस सम्बृद्धियुताखिलमानवाः ॥ ५ ॥ भृगुसुतेजलदस्यपतिर्यदा जल युताजलदादिविशोभनाः ॥ धननिधानयुताद्विजपालकानृपतयो जनदासुखदायकाः ॥ ६ ॥ रविसुतेजलदस्यपतौ भवेद्विरतवृष्टिवती वसुधातदा ॥ मनसितापकरोनृपतिःसदा विविधरोगरताजन तापदा ॥ ७ ॥ इतिमेघेशफलम् ॥

अथरसेशफलम् ॥

रसपतौतरणौधरणीतदाविरसभोगरताल्पपयोधराः ॥ वसनतैल घृतप्रियमानवासुखरसंचभुनक्तिमहीपतिः ॥ १ ॥ यदिविधौरसपे भुविमानवोनवनवांयुवतींवुभुजेप्रियाम् जलधरावहुवारिविघायका रसवतीधनधान्यवतीमही ॥ २ ॥ यदिधरातनयोरसपोभवेत् नरसराशियुताजनताशुभा ॥ नरपतिर्विषमोजनतारदो नजलदो वहुवृष्टिकरोभुवि ॥ ३ ॥ रसपतौद्विजराजसुतेमहीसुलभधान्य घृतादियुताजनाः ॥ प्रमुदितावरनायकपालितावहुजलाखिलदेश सुरक्षिताः ॥ ४ ॥ यदिगुरौरसपेजनसौख्यदाकमलवंतिसरांसितृणा निच ॥ जनपदाद्विजपूजनतत्परागजसवाजिरथोष्ट्रयुतानृपाः ॥ यजनयांजनकोत्सवकोत्सुकाजनपदाजलनोषितमानसाः ॥ सुख सुभिक्षसमोदवतीधराधरणिपाहतपापगणाप्रिया ॥ ६ ॥ रविसुते रसपेरससंक्षयोनजलदागददाश्चपयोधराः ॥ अजगवांगजवाजि खरोष्ट्रहाजनपदेषुनरानरसयुता ॥ ७ ॥ इतिरसेशफलम् ॥

अथनीरसेशफलम् ॥

निरसाधिपतौसूर्येत्रयुचंदनयोरवि ॥ रत्नमाणिक्यमुक्ता

दिरर्घवृद्धिप्रजायते ॥ १ ॥ शुक्लवर्णादिवस्तूनिमुक्तारजतवास साम् ॥ अर्घवृद्धिप्रजायेनशशांकेनिरसाधिपे ॥ २ ॥ नीरसे शोयदाभौमःप्रवालंरक्तवाससं ॥ रक्तचंदनताम्राणांमर्घवृद्धिर्दिने दिने ॥ ३ ॥ चित्रवस्त्रादिकंचैवशंखचंदनपूर्वकं ॥ अर्घवृद्धिः प्रजायेतनीरसेशोवुधोयदि ॥४॥ हरिद्रापीतवस्तूनांपीतवस्त्रादिकं चयत् ॥ नीरसेशोयदाजीवेसर्वेषांप्रीतिरुत्तमा ॥ ५ ॥ कर्पूरागरुगंधानां हेममौक्तिकवाससाम् ॥ अर्घवृद्धिःप्रजायेत नीरसेशोभृगुर्यदि ॥ ६ ॥ त्रपुःपिंडादिलोहानांकृष्णवस्त्रादि-वस्तुनां ॥ अर्घ वृद्धिः प्रजायेत मंदेनीरसनायके ॥ इतिः ॥

॥ अथधनेशफलम् ॥

द्रविणपे यदिवः सरपेतदावणिजमो वहुद्रव्य समागमाः ॥ गजतुरंगममेषखरोष्ट्रतोधनचयंलभतेक्रयविक्रयात् ॥ १ ॥ धन पतिर्मृगलांछनकोयदारसचयात्क्रयविक्रयतोधनं ॥ वसनशालि युगंधनजंवहुद्रविणतैलघृतंनृपसौख्यकम् ॥ २ ॥ असतिमौल्य करोधरणीसुतःशरदितांवकरस्तुषधान्यहृत् ॥ महमिभासिभवे द्विगुणंतदानरपतिर्जनशोकविधायकः ॥ ३ ॥ द्रविणयोहिमर श्मिसुतोयदाविविधसंग्रहवस्तुफलायदा ॥ द्विजवराजपयोगसु सयुंताःकृषिविशेषविशेषिनमानसाः ॥ ४ ॥ सुमनसांचगुरुर्द्र विणाधिपो वणिज वृत्ति परासुखभाजनाः ॥ फलितपुष्पितभूमि रुहाः सदाविविधद्रव्ययुताभुविमानवाः ॥ ५ ॥ द्रविणपोभृगुजोद्र विणयुतासमधनाः सकलातनुमानवाः ॥ समसुखाक्रयविक्रय जीवनोनृपतियोजनपालनतत्पराः ॥ ६ ॥ द्रवणिपेयेरविजेविरलंधनं गदरतंधरणीवतयःसदा ॥ अधनवांवणिजाकृषिजीविनांद्विजवरा

परिपीडितमानवाः ॥ ७ ॥ इतिद्रव्येश (धनेश) फलम् ॥

अथ फलेश फलम् ॥

द्रुमवतीफलपुष्पवतीधरा प्रमुदिताफलभोगविरोधतः॥ बहुजलं जलदोभुवि मुंचतिकचिदपिप्रमितं फलयोरविः ॥ १ ॥ यदिविधुप फलयोद्रुमराशयः फलयुताव्रतिभिः कुसुमैर्युता ॥ द्विजमुखावरभोग समन्विता नृपतयोनयनाटनतत्पराः ॥ २ ॥ फलपतिर्यादिभूतनयो भवेल्प बहुपुष्पफलान्वितमेदिने ॥ गतभयानृतदेशजनास्तदा नृप तयोवहुविग्रहकारकः ॥ ३ ॥ यदिवुधेफलयेफलमुत्तमं जलधराजल राशिमुचस्तदा ॥ वहुतृणंकुसुमंकमलैर्युतं जनपदा जनसौख्यमुदा न्विताः॥ ४ ॥सुरगुरु फलनायकतांगतोगतमय ।वनरीशमहाद्रुमः यजनयाजनकोत्सवमंदिराः श्रुतिविचारपराद्विजपूर्वकाः ॥ ५ ॥ यदिफलस्यपतौभृगुजेधराः मृदुकुमारमहीरुहराशयः ॥ वहुपथा नरनाथसुभोगदा द्विजवराश्रुतिपाठपरायणाः ॥ ६ ॥ यदिशनिः फलमःकलहाभवेज्जनित पुष्पगणस्यद्रुमःसदा॥ हिमभयंनरतस्कर जंतदाजनपदा जनराशिसमाकुला ॥ ७ ॥ इतिफलेशफलम् ॥

अथदुर्गेश (सैन्याधिप) फलम् ॥

नयविशेषकरस्तरणिस्तदागतभयानरराजपुरोगमाः ॥ समधि केनतदानृपजोन्यजखपथिसंभ्रजतानभयंक्वचित् ॥ १ ॥ गढपतिः मृगलांछनकोयदानृपसुराज्यविलाशितपौरजा ॥ वहुधनेक्षुज [illegible] ॥ २ ॥ अवनिजोगढ [illegible] ॥ जनपदेषुजना क्रयविक्रयेभयविशेषतयानफलंक्वचित् ॥ विषयसाम्यसुखंशशि

जेप्रभौभवतिराशिनतेषुविशेषतां ॥ शशिसुतेयदिकोटकपालके पथिषुदस्युतानभयंकचित् ॥ ४ ॥ सुरगुरौगदपेनयशोभितानरवरानरपाःकरपालिताः ॥ गिरिषुवैनगरेषुसमंसुखंसुखमतीद्विजशास्त्रवतांनिश ॥ ५ ॥ नरवरेषुविशेषपतिर्यदाभृगुसुतोबहुसौख्यकरोमतः ॥ विनयवाणिजवोहसमासुखोगतवनांनिकटेपिवदूरतः ॥ ६ ॥ रविसुतेगढपालिनिविग्रहेसकलदेशगताश्चलिताजनाः ॥ विविध वैरिविशेषितनागराःकृषिधनंशलभैर्मुषितंशुचिः ॥ ७ ॥

इतिकोटपालफलम् ॥ इतिराजादीनांफलम् ॥

गुरुउदयवशेनवर्षफलम् ॥

नक्षत्रेणसहोदयमस्तंवायेनियातिसुखमंत्रीतत्संज्ञंवर्षस्यात् ॥

कार्तिक्यादिसंयोगे कृतिकादिद्वयंद्वयं ॥ अंतोपांत्योपंचमश्चत्रिधामासत्रयस्मृतम् ॥ अथफलम् ॥ सस्यानिघृतकार्पास तैलादिसुखसंचयः ॥ चैत्रवर्षेभवेदुवृद्धिर्नृपसौख्यफलप्रदा ॥ १ ॥ अर्थविविधभावेन जायतेद्रविणप्रदं॥निरुजानिर्भयपालोकाविशापेजनपूजिताः ॥ २ ॥ तस्करैःपापरोगैर्वा पीडयतेपीडयाजनाः ॥ भ्रमंतेस्वेच्छयाभूम्या निर्द्रव्येज्येष्ठसंज्ञके ॥ ३ ॥ अर्घमहघतायांतिधनधान्यसमंभवेत् ॥ आपाढेस्वल्पवृष्टिश्च तुषधान्यमहर्घता ॥४ मनोल्हादार्थकुर्वीति जनाःसौख्यसमायुताः ॥ श्रावणेवृष्टिरस्तुगागोमहिष्यादिकंसुखं ॥ ५ ॥ अर्घमहर्घतांयांति धनधान्यसमंभवेत् ॥ माधवोवर्षतिस्वच्छं संपदोभाद्रवर्षके ॥ ६ ॥ सुभिक्षंपूर्वसस्यस्याज्ज्वररोगाकुलंजगत् ॥ अश्विनेशोभनावृष्टिर्नृपसौख्यकरीसदा ॥ ७ ॥ पापबुद्धिरतालोका भवंतिकार्तिकेसदा ॥ देवतानैवमन्यन्तेराज्यंचतस्करैर्हृतम् ॥ ८ ॥ कार्पासादिमहर्घस्याव

गोधूमाषातिलादिकं ॥ मेघोवर्षतिदेवोवामार्गशीर्षेविशेषतः ।९। ज्वररोगक्षुधार्ताश्च नानाजनपदाःसदा ॥ महर्घंतित्रयोमासापौष्येस्वस्थ्यंततःपरं ॥ १० ॥ सुभिक्षंपूर्वयाम्यायां मध्यमंपश्चिमे तथा ॥ उत्तरेरौरवंमाघे वर्षधान्यसमर्घता ॥ ११ ॥ सुभिक्षंप्रचुरा वृष्टिः उत्तरेयाम्यपश्चिमे ॥ पूर्वस्यांरौरवंघोरं फाल्गुणेवत्सरेशुभम् ॥

इतिगुरुवर्षफलम् ॥

अथगुरुचारशनिचारफलम् ॥

अथातःसंप्रवक्ष्यामिगुरुचारमनुत्तमम् अनेनगुरुचारेणप्रभवाद्यब्द संभवः ॥ १ ॥ मेषराशौयदाजीवश्चैत्रसंवत्सरस्तदा ॥ प्रवुद्ध नामाजलदवर्षाचसर्वतोसुखी ॥ २ ॥ सुभिक्षंविगृहोराज्ञांसमर्घंवस्त्र कर्पटम् ॥ हेमरूप्यंतथाताम्रंकार्पासंचप्रवालकम् ॥ ३ ॥ मंजिष्ठा नारिकेलंचपट्टसूत्रसमर्घता ॥ कांस्यंलोहंतथैवेक्षुपूगादीनांचसंगृहा ॥ ४ ॥ अश्वपीड़ामहारोगोद्विजानांकष्टसंभवः ॥ मासत्रयेफल मिदंपश्चाद्भाद्रपदेपुनः ॥ ५ ॥ गोधूमशालीमाषानां आज्य स्याग्रेमहर्घता ॥ दक्षिणामुत्तरस्यांखंडवृष्टिप्रजायते ॥ ६ ॥ दक्षिणोत्तरयोर्देशे छत्रभंगोपिकुत्रचित् ॥ दुर्भिक्षमपिषण्मासा आश्विनेफाल्गुणेतथा ॥ ७ ॥ पश्चात्सुभिक्षंद्वौमासौनाम्ना मेघोजलेंद्रकः ॥ कार्तिकंमार्गशीर्षंच कार्पासान्नमहर्घता ॥ ८ ॥ मेदपाटेराजपीड़ा देशभंगोल्पवर्षणम् ॥ लोकाःसरोगादुर्भिक्षंपौष्ये रसमहर्घता ॥ वाणिज्येसंशयोलाभ वैशाखेदुर्जरारसाः ॥ छत्रभंग स्तथाषाढ़े श्रावणेचभयंयुधि ॥ १० ॥ नवीनोजायतेराजा कुत्रि न्मेघोपिकार्तिके ॥ धान्यानिसंगृहेल्लाभःत्रिगुणोमासपंचमे॥ ११ ॥ अब्दमध्येयदाजीवः क्रमाद्राशीत्रयंस्पृशेत् ॥ तदासुभटकोटीभिः

प्रेतपूर्णावसुंधरा ॥ १२ ॥ उदक्वीथीचरन्जीवः सुभिक्षक्षेमकारकः मध्यमेमध्यमंत्रार्थमेवमन्येपिखेचराः॥ १३ ॥ एषराजकिलमेषविशेषः शेषमत्रगुरुगम्यमशेषं ॥ द्वेषमत्रगुरुनारविचारः संगृहेभजनुजानु नकश्चित् ॥ १४ ॥ इतिमेषेगुरुफलम् ॥ वृषराशौयदाजीवो वैशाषोवत्सरस्तदा ॥ नंदशालिभवेन्मेघः सर्वधान्यसमर्घता ॥ १५ ॥ वैशाषेअश्विनेमासेस्त्रीणां रागोश्चदंतिनो ॥ अश्वानांचमहापीड़ा गृहेवैरंपरस्परं ॥ १६ ॥ उत्तरस्यामनावृष्टिः दुर्भिक्षंमंडलेक्वचित् ॥ पूर्वस्यांचमहासौख्यं राजवृद्धिविपर्जयः ॥ १७ ॥ घृतं तैलंचमंजिष्ठा मौक्तिकंचप्रवालकम् ॥ लवणंरक्तवस्त्रंचनारिकेलंसमर्घता ॥ १८ ॥ गोधूमाशालिचणका मुद्गामाषास्तथातिलाः ॥ महर्घाःश्रावणेज्येष्ठे मेघानांचमहाजलम् ॥ १९ ॥ शृंगालकेमालवेच उत्पातोराजविग्रहः ॥ देशभंगाद्भयंमन्यं घृतधान्यसमर्घता ॥ २० मेदपाटेग्रीष्मऋतौ समर्घंधान्यमीरितं ॥ मरौधान्यंघृतंतैल महर्घं धातवोन्यथा ॥ २१ ॥ अश्वरोगश्चतुष्पाद नाशतीडागमःक्वचित ॥ आषाढ़ेश्रावणेवर्षानवर्षाभाद्रपादके ॥ २२ ॥ सिंधुदेशेनागपुरेश्री विक्रमपुरस्थले ॥ धान्यंमहर्घंसमर्घंमेदपाटेतदाभवेत् ॥ २३ ॥ मासद्वयंसंग्रहःस्याद्धान्यानांचततोशुभम् ॥ दुर्भिक्षंमासदशकेमार्गरोधःप्रजाक्षयः ॥ २४ ॥ मुनिवृषभैर्वृषमतो गुरौफलंसकृतमेवमादिष्टम् ॥ जिनवृषभदृष्ट्या नवलादवलासर्वत्रसरसास्यात्॥ २५ ॥इति॥ मिथुनेसंगतेजीवेज्येष्ठाख्योवत्सरेभवेत् ॥ वालानांदोषमश्वानांखंड वृष्टितदाभवेत् ॥२६॥ कर्कोटकस्तदामेघो।गंड्यदोमतांतरे ॥ तस्करैः पीड्यतेलोकापापोपहतमानसैः२७पश्चिमायांसिंधुदेशे वायव्येचोत्तरादिशि ॥ चित्राविचित्राजायंते रोगाःपीडोत्तरापथे ॥ २८ ॥

श्वेतवस्त्रंतथाकांश्यं कर्पूरंचन्दनादिकं ॥ मंजिष्ठानारिकेलंच पुंगी
स्वर्णंचरूप्यकम् ॥ २९ ॥ मासानांपंचकंयावत् समर्घंत्रितोभवेत् ॥
पश्चात्महर्घपूर्वोक्तं धान्यानांचसमर्घता ॥ ३० ॥ पूर्वाग्निया
म्यनैर्ऋत्या मीशानेचसुभिक्षता ॥ श्रावणेतुमहत्कष्टं महिषीनांच
हस्तिनां ॥ ३१ ॥ राजायुद्धंप्रजावृद्धिः सुभिक्षंमंगलंभुवि ॥
समर्घंतैलखंडानि शर्करांधातवोपिच ॥ ३२ ॥ शृंगालदेशेचोत्पाताः
क्रयाणकेयुमंदताः ॥ महावर्षाघृतंधान्यंसमर्घंचगुरुस्तथा ॥३३॥
शुंठीमरीचपिप्पल्यो मंजिष्ठाजातिकोशकाः ॥ महर्घमेतद्वस्तुस्यात्
फाल्गुणेधान्यसंग्रहः ॥ ३४ ॥ कार्पासलवणंगुडतिलगोधूमयुगं
धरीचणकमुद्गान् ॥ ग्राह्यविक्रयक्रितस्त्रिगुणोलाभःत्रिमासांते ॥
३५ ॥ गुरुशर्विमिथुननिलीनसारस्यमनस्यतः ॥ करोतिजनेऽर्थभि
चारचारचर्वावलात्कांचित् देशभंगभयम् ॥ ३६ ॥ इतिमिथुन ॥
कर्कोगुरुस्तथाषाढेवत्सरेतत्रजायते ॥ पूर्वदक्षिणयोर्मेघोमध्यमंकव
लोभिवः ॥ ३७ ॥ महर्घंसर्वधान्यानांकार्तिकेफाल्गुणेतथा ॥
पश्चिमायांसिंधुदेशेवायव्येचोत्तरादिशि ॥ ३८ ॥ क्षयःचतुष्पदानां
स्यात् दुर्भिक्षंमृगसैन्यकम् ॥ हेमरूप्यंतथाताम्रंपट्टसूत्रंप्रवालकम् ॥
३९ ॥ मौक्तिकंद्रव्यमन्नादिलोकोत्क्यालोकविक्रयः ॥ मंजिष्ठा
श्वेतवस्त्राणांमहर्घंसुभटक्षयः ॥ ४० ॥ गोधूमशालितैलाज्यलव
णादिगुडंयुतः ॥ मापामहर्घंजायंतेपापकर्मरतोजनः ॥ ४१ ॥
कार्तिकेद्वितयेधान्यंघृतंतैलंमहर्घता ॥पट्टसूत्रंचवस्त्रानिजातीफल
लवंगकम् ॥ ४२ ॥ मरीचंशीतकालेपुसंग्राह्याणिवणिकजनैः ॥
वैशाषेज्येष्ठयोर्लाभोद्विगुणस्तस्यविक्रयात् ॥ ४३ ॥ वर्षाकाले
महावर्षासर्वधान्यमहर्घता ॥ सुभिक्षंतिलकार्पासत्रणक्यानांगुड

स्यच ॥ ४४ ॥ गोधूममाषतुवरीयुगंधरीमुद्गकोद्रवादिनां ॥ आषाढे संगृहतोलाभः पुनरुद्भवोद्विगुणः ॥ ४५ ॥ इतिकर्कराशिफलम् ॥

सिंहेजीवश्रावणाख्यो वत्सरेवासुकिर्घनः ॥ वहुक्षीरघृता गावो जलपूर्णाचमेदिनी ॥ ४६ ॥ देवब्राह्मणपूजास्यान्नराणां, मान्यतासतां ॥ रोगाविवाहश्चान्योन्यंचतुष्पदमहर्घता ॥ ४७ ॥ म्लेच्छदेशेमहायुद्धं छत्रभंगश्चविड्वरं ॥ उद्रसःक्रियतेलोका पश्चिमोत्तरवायुषु ॥ ४८ ॥ गोधूमातिलमाषाज्य शालीनांच महर्घता ॥ सुवर्णरूप्यताम्रादिप्रवालानांसमर्घता ॥ ४९ ॥ सुभिक्षंसर्वदेशेश्च मेघोप्याषाढभाद्रयोः ॥ श्रावणेवृष्टिरल्पैःवसुका लःकार्तिकेस्मृतः ॥ ५० ॥ सोपारीलोपराडोंडा मंजिष्ठाःशुंठि खारिका ॥ पट्टकूलंजातिफलंकर्पूरंसुमहर्घकम् ॥ ५१ ॥ उदकालेगुरुः खंडाहिंगुघ्नीःश्चित्रशर्करा ॥ महर्घमेतद्वस्तुस्यात्धान्यस्याति समर्घता ॥ ५२ ॥ ज्येष्ठेपृष्कंदकैर्धान्यं लभ्यंतेमणमानताः ॥ स्कंदकेपंचविंशताघृतंतैलंतुविंशिषे ॥ ५३ ॥ स्कंदकेर्दशभिर्लभ्यां गोधूमामणसंमता ॥ धान्यंकार्पासतैलादि रससंग्रहणं, शुभं ॥ ५४ ॥ फाल्गुणेस्त्रतेज्येष्ठात् लाभोद्विगुणतःपरं ॥ गुरौ सूर्य्यगृह प्राप्तेसर्वत्रग्रामिकोदयः ॥ ५५ ॥ इतिसिंहराशिफलम् ॥

कन्याभोगेगुरोर्जातिमेघनामनमस्तमः॥भाद्रसंवत्सरस्तत्रसप्तमासान्न रौरवं॥५६॥ततोपरंसुभिक्षंस्यात्कार्तिकान्याधवावधिः॥आद्यासंग्रहणा लाभोद्विगुणोभाद्रमासतः॥५७॥चंतुष्पदानांपिडापिगोधूमाशालिश करातिलमाषामहर्घाणिगुडादीक्षुरस्तथा॥५८॥ शूद्राणांमत्स्यजानांच कष्टंसौराष्ट्रमंडले ॥ खंडवृष्टिर्दक्षिणास्यान्मुत्पातान्म्लेच्छमंडले ॥ मेदपाटेश्रृगालेचपरचक्रभयंरणं ॥ सर्वदेशोवन्हिभयंमेघोल्पश्च

रसाल्पता ॥ ६० ॥ मरुदेशेछत्रभंगःचैत्रेवामाधवेभवेत् ॥ गोधूमा घृततैलानिमहर्घाणिसमादिशेत् ॥ ६१ ॥ वस्त्रकंबलधातूनांरत्ना देश्चमहर्घता ॥ आषाढ़ेधान्यसंगृह्यभाद्रेलाभश्चतुर्गुणः ॥ ६२ ॥

इतिकन्या ॥

गुरौस्तुलायांमेघस्यात्तक्षकोवत्सरोश्विनः ॥ तदातिवृष्टिमंजिष्ठा नारिकेलमहर्घता ॥ ६३ ॥ अन्योन्यंराजयुद्धानिसमर्घंभोज्यतैल-योः ॥ मार्गशीर्षेतथापौषेद्वयोर्धान्यस्यसंग्रहः ॥ ६४ ॥ लाभस्या त्पंचमेमासेमार्गादारभ्यचैत्रतः ॥ छत्रभंगस्ततोराजविग्रहक्वापि मंडले ॥ ६५ ॥ उत्पातोमरुदेशेस्यान्मार्गेभयंचचौरतः ॥ कोटजे सलमेर्वाथैःपरचक्रगमोमतः॥ ६६ ॥ स्कंदकैर्दंशभिश्चैकमण धान्यं चउच्यते ॥ कार्तिकेमार्गशीर्षेवामाघस्तेषाढ़केमहान् ॥ ६७ ॥ त्रयोदस्कन्धकैश्च पंडामणमवाप्यते ॥ पंचासत्स्कंदकैमिश्रीशर्करा मणिविक्रयः ॥ ६८ ॥ रसक्रयाणकादीनां संग्रहेणचतुर्गुणः ॥ लाभश्चतुर्थमासेस्यात् धातूनांचमहर्घता ॥६९॥ इतितुलाराशि ॥

वृश्चिकस्थेगुरौसोमे मेघःकार्तिकमासतः ॥ संवत्सरार्धवृष्टि-र्धान्यमल्पंभयंमहत् ॥ ७० ॥ गृहेपरस्परं वैरमष्टौमासानसंशयः ॥ भाद्राश्विनेकार्तिकाख्यास्त्रयोमासामहर्घता ॥ ७१ ॥ तता सुभिक्षंजायंते मंदवृष्टिश्चमंडले ॥ पश्चिमायांजीववृष्टिर्दुर्भिक्षंवायु मंडले ॥ ७२ ॥ हेमरूप्यकांस्यताम्रतिलाज्यश्रीफलादिषु ॥ महर्घंगुड़कार्पास लवणश्वेतवस्त्रकम् ॥ ७३ ॥ महिषीवृषभाश्वा समर्घाधान्यमंडले ॥ तीडान्म्लेच्छ लोकानांमहोत्पातश्चसं भवेत् ॥ ७४ ॥ शृगालदेशेकटकं रोगोश्वमहिषीषु च ॥ राजा निचमहर्घाणि हिंगुपारिकपोपरा ॥ ७५ ॥ देशभंगोस्वल्पवृष्टि

मेता ॥ अष्टादशाभिराज्यंत्र तैलंतैर्मनुसंमिते ॥ १०८ ॥ श्रावणे वाभाद्रपदेधान्य संगृह्यतेतदा ॥ पौषेस्याद्विगुणोलाभः युगंधर्याश्च विक्रणात् ॥ १०९ ॥ इतिकुंभराशिफलम् ॥

मीनेगुरौफाल्गुणिस्याद्वत्सरःसंभवोघनः ॥ खंडवृष्टिमहर्घाणि सर्वधान्यानिभूतले॥११०॥वायुरोगश्चपीडाचदेशांतरंव्रजेज्जनः॥ मासानांपंचमं यावद्भयंराजविरोधनः ॥ १११ ॥ पश्चात्सुखंसुभिक्षं चशालिगोधूमशर्करा ॥ तिलतैलगुडानांच महर्घत्वंसमीरितं ॥ ११२ ॥ मंजिष्ठानारिकेलानिश्वेतवस्त्रंचदंतकाः ॥ कर्पूरलवणा ज्यानां महर्घत्वंप्रजायते ॥ ११३ ॥ चतुष्पदानांमरणं वैशाषज्येष्ठ योर्भवेत्॥ आषाढेश्रावणेधान्यं घृतंतैलंमहर्घता ॥ ११४ ॥ श्रावण स्योत्तरेपक्षे महावर्षाप्रजाते ॥ घृतंसमर्घभाद्रपदे शुभावाश्विन कार्तिकौ ॥ ११ ॥ समर्घास्तिलकार्पासाः छत्रभंगततोर्बुदे ॥ मार्ग शीर्षेतथापौषेउत्पातोमरुमंडले । ११६ ॥ ग्रीष्मेकटकसंग्रामे चतुष्पदःमहर्घता ॥ स्यान्नागपुरदुर्भिक्षं वर्षाकालेसुभिक्षता११७॥ इतिकतिपयशास्त्रात् वीक्षणाद्गौरवेण गुरुचरितविचारः स्फारबोधाय वृद्धः ॥ इहमतिरतिशाषी नैवयुक्तायुक्तादविकलफललाभो वाक्यतोयःयतः स्यात् ॥ इतिगुरुचारफलम् ॥

अथशनिचारफलम् ॥

मेषराशौयदाशौरी तदापश्चिमायां राजविग्रहः वस्तु महर्घता नृपतेर्भयं गुर्जरगौडसौराष्ट्रदेशेषुधान्यमहर्घताद्विगुणोव्यापारेलाभः छत्रभंगः राशिभोगात्परतः उत्पात् बहुलामही तथा महीनदी पार्श्वे पीड़ा राज्ञामुपद्रवः मेघाबहवः सप्तधान्यानि युगंधर्या दीनिसंगृह्यते मास चतुष्टयानंतरे विक्रये द्विगुण लाभः गुर्जरे

देशे अहिफेन गुड़ शर्करा खंडा गोधूम बाजर चवला विक्रये लाभः सुवर्णरूप्य लाभः प्रथमं शनैश्चर सप्त मास राशिभोगतः पश्चादुत्पातश्चालका भूकंप गर्जितः क्वचित्फाल्गुणेउपद्रवः तदा वस्त्र महर्घता व्यापारेजयः मालवदेशे घृत शर्करा तैल खोपरा रायणः इत्येतानि महर्घाणि कटक चालकः अष्टौमासान् इत्येत द्गौतम स्वामिभाषितम् राशिमंडलम् शनैश्चर प्रचारेण ज्ञातव्यं वर्षहेतवे ॥ १ ॥ इतिमेषराशिफलम् ॥

वृषेयदाशनि तदा विग्रहो दक्षिणादिशिपरचक्रभयं वैराडदेशे अस्वस्थता पश्चिमापतिर्दक्षिणस्यांयातिः देशउद्वश अन्नं महर्घं गोधूमचणक व्यापारे लाभः सुवर्णरूप्य पित्तलकांस्य व्यापारे लाभो मासषट्कंयावत् आषाढ़ादि मास त्रये महान् व्यवसाये लाभः अशोरदेशे युद्धंम्लेच्छ हिंदुराजस्यक्षयः भाद्रपदे अहि फेनाल्लाभः अशोरदेशे युद्धं देवगढ़ देशेविग्रहः दुर्गभंगः शनि-श्चरस्यः राशिभोगे एकवर्षानंतरंच महर्घता तन्मधेअजमकः तस्य माघ मासेविक्रयेलाभः ॥ इतिवृषराशिः ॥

मिथुने शनि तदा पश्चिमायां दुर्भिक्षं राजकुल विग्रहः मालव देशेविग्रहः राजभोगात् मासपंचक तत पश्चात् उज्जयिन्या उत्पातः दुर्गभंगः मासद्वयात्परं दुर्भिक्षं मास १ यावत्ततोवत्सरें शुभम् धान्यनिष्पत्तिः पूर्वदेशे उत्पातः गुड़समता लवंग केसर एलची पारदहिंगु पानड़ी रेसमकथीर शुंठिएतानिमहर्घानिक्षत्रिया णां मालवेदेशेषंडेजयदुर्गेराधेः उच्चवस्तुविक्रयःइतिमिथुनराशि।

कर्कराशि शनिस्तदाभेद पाटदेशे मालवा सीमांतं उद्वे सता छत्रभंगो महीपतेः राजयुद्धं सवलं मालपदे मुगल

कटकं तापी नदीतीरे यावत् विग्रहः परं कुशलं दक्षिण दिशि लोकनाशः ग्रामभंगः श्रावणे धान्य महर्घं भाद्रपदे जलोपद्रवः मेघावहवः अश्विने वर्षा अहिफेन महर्घता मास द्वये पुनःसमर्घतः बासर वस्तु महर्घं घाटेक महिष महर्घता व्यापारेलाभः ॥

इतिकर्कराशिफलम् ॥

सिंहराशौ शनिस्तदा अन्न सर्वत्र निष्पद्यते जल वृष्टिर्बहुलता मालवा देशे व्यापारेलाभः राशिभोगांतरंमासगमनं यातित्रला चलत्वं परं अन्नं महर्घशोक वंधु तुल्याः संग्रामाः पतिग्रामां गुड गोधूम चणक तंदुल शालि मसूरान्न घृतादि वस्तु व्यापारे लाभः पूर्वे सुभिक्षं परं मारीभयं सर्व देशेषु पीड़ाः व्याकुलता अशुभं संवत्सर फलं मरीच शुंठिप्रमुख क्रयाणेलाभः ताम्र पित्तल महर्घता घृततैलादि रस महर्घता कुंकुणदेशे तृणमहर्घता मालवा मध्ये उपद्रवः परं राज्यसुख कटक विग्रह पूर्वदेशे वस्त्रलाभः सर्व वस्तु महर्घं ॥ इतिसिंहराशिफलम् ॥

कन्यायांयदाशनिःतदादुर्भिक्षं चतुर्दिशासुपितापुत्र विक्रीणाति अन्ननाशः जलवर्षानास्तिमरुदेशे शिवपूर्यांद्रवणिदेशे राजपीडा छत्रभंग शेषासर्वदेशाःशुभाअर्बुददेशेसुभिक्षं शिरोहिमध्ये अन्न लाभः सर्वधान्यसंग्रहेद्विगुणलाभः मासनवकं यावत्धान्यंरक्षणीयं पश्चाद्विक्रयः धातुवस्तुसमर्घं उत्तमवस्तुमहर्घं मालवदेशे परस्पर विरोधः राजभयांभूम्यांकिंचिदुत्पादि अशुभंगुड़समताधान्यमहर्घं अन्नभयंमहावृष्टिःत्रयंक्रयाणकानिसमर्घानि ॥ इतिकन्याराशि फ०

तुलाराशौयदशौरीसुभिक्षंस्याच्चराचरं॥ प्रजानांसुखसौभाग्यं धनधान्यंचसम्पदः ॥ १ ॥ बंगालदेशे विग्रहः तत्रैवप्रजापीडरोगा

वहुलता कार्तिकेमहाजनत्रयेकष्टं वहुलवंगालेउत्पातः छत्रभंगः अर्द्धराशिभोगात्परंउत्पातः दक्षिणदिशिउपद्रवः गोधूमचणक समघामारुंगीकांगुणीउडद ऐतेमहर्घता ज्येष्ठमासादिकयेद्विगुणो लाभः अन्येसर्वदेशाः सुभिक्षंसुस्थाः ॥ इतितुलाराशि ॥

वृश्चिकेयदाशनिः तदाहस्तिनागपुरेतद्देशे वैराटदेशेविग्रह, मालवमेदपाटवागड गुजरातिसौर उत्तरार्धदेशेःएतेषुकटकचालकः अन्नात्लाभः गोधूमकार्पासमसूरान्नातिलकपडादि व्यापारेलाभः मासनवकपरंउपद्रवः राजराणांम्लेच्छानां परस्परंयुद्धं पातसाहि गृहेक्लेशःमालवदेशेतिपीडाआयांतिसर्ववस्तुमूल्यवृद्धिअफीमलाभः ज्येष्ठमासा वृद्धिःअजमोमेथी प्रमुखविक्रयःरोगचालकःवर्षावहुला॥

इतिवृश्चिकराशिः॥

धनेशनिः तदासर्वत्रमहर्घता लोकदुर्वलतातैलतिलदाणागोधूम चणकसमर्घा लौंगडोडाअसालिनुं अजमोमेथी घृतएतानिवस्तूनि महर्घानि श्रावणादि मासचतुष्टये मारीपीडाराजसुखं उत्तरापथे कटकचालकः । इतिधनराशिफलम् ॥

मकरेशनिस्तदानन्दःसर्वत्रसुभिक्षं राजनिर्भयः आरोग्यंसमा धानं तथाकर्पूरपारदजातीफललौंग खोपराहींगु जीरासोपारी आ- वीरहालीघृतलवणमहर्घता मूल्यवृद्धिःआषाढादिमास सप्तकंयावत् अहिफेनलाभःदक्षिणास्यांअहिफेनमहर्घताचौरभयंदेशांतरेमहाज नपीडा धनहानिशाखाप्रमाणेन मालवदेशेरोगपीड़ा प्रथमंवर्षभयं- करंपश्चात्शुभान्देवाभंगराशिभोगते ॥ इतिमकरराशिः॥

कुंभेशनिस्तदादक्षिणकुंकण महाविग्रहःराजक्षयःप्रजाभयं धन प्रलेपाराशिभोगात् माससप्तकंयावत् सर्वधान्यमहर्घताआषाढादि

अथवृष्टिअवरोधकयोग ॥

वर्षा के दिनोंमें सूर्य के अंशों से मंगल आगे हो और सूर्य मंगल एक राशिको होवैं तो वृष्टि को रोकता है ॥ १ ॥ यदिबुध और शुक्र एक राशि का होवै और दोनो के बीचके अंशोंमें सूर्य होवे तो कुयोग वर्षा को रोकताहे ॥ २ ॥ जब बृहस्पति औरमंगल एकराशिका होवे तो चौमासेमें वर्षा रोकताहै।३।सिंह कुम्भकाराहु केतु होवे और क्रूरग्रहों करिकै युक्त हो या क्रूरग्रह देखते हों तो वर्षा में आधाहोती है ॥ ४ ॥

महर्घयोग ॥

ज्येष्ठा नक्षत्र के सूर्य मंगल होवें तो १ मासतक गेहूं महँगा रहे ॥ १ ॥ सूर्य और केतु भरणी नक्षत्र के होंय तब लवण महँगाहोवै ॥ ऽनुराधा का शनि और ज्येष्ठा का गुरु होवे तो अन्न महँगाहोवै प्रजामेंजंगमचै धनका शनिश्चरमिथुनका मंगल इन दोनों ग्रहोंके साथ राहु वा केतु आर्द्रा या पूर्वाषाढ़ का होवै तो अन्न और रस महँगा करे और ऐसा योग वर्षाकालमें होवे तो वृष्टि का अवरोधकरे ॥ ४ ॥ धनिष्ठा का शनिश्चर मंगल होनेसे भी वर्षाका अवरोध होताहै ॥ ५ ॥ शतभिष का गुरु चित्राका मंगल माघ या फाल्गुणका महीना हो तो गेहूंकी फसलको बिगाड़ दे ॥ ६ ॥ आर्द्रा नक्षत्रका शनिराहु होवै तो वर्षाका नाश और दुर्भिक्ष का संभव करै ॥ ७ ॥ वृषका राहु मंगल युक्त होनेसे अन्न खरीदनेवालेको ६ मासके अंतपर्त दूना लाभ होताहै ८ ॥ वृषराशिका सूर्य मंगल शनि होवै तो १ मास वर्षाका अवरोध होताहै ॥ ९ ॥ उत्तराभाद्रपद का शनि विशाषा का मंगल कर्क

का गुरु होवै तो दुर्भिक्ष करै ॥ १० ॥ उत्तराभाद्रपद और हस्तके राहु तथा केतु होवै तो रस व कार्पास महँगाहा तथा एक एक नक्षत्र पर एक एक होनेसे बहुत अशुभ फल जानना ॥ ११ ॥ मेष तथा वृश्चिकके शुक्र अन्न महँगा करतेहैं ॥ १२ ॥ मकर तथा कुंभके सूर्य वस्त्र महँगा करतेहैं ॥ १३ ॥ मकर तथा कुंभका राहु तथा शनि और बुध होनेसे द्विपद तथा चतुष्पद प्राणियों को महादुःख होताहै ॥ १४ ॥ मेष और वृश्चिक के मंगल तथा राहु केतु और सूर्य शुक्र होनेसे गुड़ व कपास महँगा होताहै१५ ॥ मेष और वृश्चिक का राहु तथा शनि होवै तो ताम्र तेज हो वै १६

समर्घयोगविचारः ॥

महर्घ योग में यदि समर्घ योग आजावै तो महर्घ योग का नाश करता है ॥ यदि चैकराशे शनिराहु युक्तः अन्नं समर्घं ॥ श्लेषा नक्षत्र के मंगल बुध शुक्र होने से अन्न समर्घः राज्य प्रजा में आनंद हो ॥ मूलका शनि स्वाति का बुध अन्न सस्ता करताहै ॥ आद्रा की बृहस्पति में रस कपास सता होता है ॥ श्रवण का बुध शुक्र पूर्वाषाढ़ का गुरुहोवै तो अन्न व रस कपासको सस्ताकरै मघा या धनिष्ठा का गुरु मृगशिरा का राहु भी अन्न मंदा करताहै । सूर्य बुध शुक्र एक राशि में हो तो सर्व धान्य सस्ता हो इसयोग में सूर्य से अधिक अंश पर बुध शुक्र हों तो वर्षा श्रेष्ठ होती है कृत्तिका और उत्तराभाद्रपद का गुरु चांदी चावल रस कपास सस्ता करता है ॥ विशाषा का और भरणी का शुक्र तथा गुरु होवै तथा पुनर्वसु का शुक्र होने से कपास और अन्न को सस्ता करै ॥ श्रवण और धनिष्ठा के शुक्र और गुरू होने से गेहूं

को सस्ता करे ॥ अधिक मास में यदि मंगल का राशि चार होवे तो उत्तमवर्षा हो ॥ शनिसे ५वें ७वें ९वें चंद्रमाहो और बृहस्पति शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो उत्तम वर्षा होवे । शुक्र से ७ चंद्रमा हो बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो तो वर्षा का अभाव न होनेसे उत्तम वर्षाहोतीहै ॥ तुलाका शुक्र मंगल हो तो अन्न मंदाहो ॥ सूर्य आगे पीछे शुक्र बीचमें बुधहोवैं तो अन्न सस्ता होवे ॥ इत्यादि ॥

वर्षागर्भलक्षणम् ॥

मार्गशीर्ष शुक्ल १ से जिस नक्षत्र में वद्दल बायु इत्यादि गर्भ रहा सो १९५ दिनोंसे बर्षताहै परन्तु मेष संक्रांति में अश्वि-न्यादि नक्षत्र १० दश वैर्षे तो उक्त दिन में थोड़ा बर्षताहै ॥

पुरुषनपुंसकस्त्रीनक्षत्रसंज्ञा ॥

आर्द्रासे स्वाति तक १० नक्षत्रस्त्री संज्ञा विशाषासे ज्येष्ठातक ३ नक्षत्र नपुंसक संज्ञा मूलसे मृगशिरा तक १४ नक्षत्र ॥ पुरुष संज्ञा फलम् ॥ वर्षा रोधक योगनहो और स्त्री नक्षत्रके दिन पुरुष नक्षत्रके सूर्य हों अर्थात् पुरुष स्त्री होनेसे पुरुषपुरुष होनेसे गर्मी पुरुष नपुंसक होनेसे गर्मीहो स्त्री नपुंसक योग होनेसे किंचित् वर्षा स्त्री स्त्री योग होनेसे वद्दल आवैं ठंडारहै ॥ और इस्काबाहन भी विचार लेना चाहिये ॥ यथा ॥ सूर्यके नक्षत्रसे दिन नक्षत्र तक गिनके ९ का भागदेय शेष १ बचैतो अश्व २ जंबुक ३ मंडुक ४ मेष ५ चातक ६ मूषक तथामृग ७ महिष ८ खर ९ नाग क्रमसे नक्षत्रके वाहन होतेहैं ॥

रोहिणी वास और समय वास ॥

मेषकी संक्रांति जिस नक्षत्र में लगे उस नक्षत्र से रोहिणी नक्षत्र तक अभिजित्सहित गिने जहां रोहिणी आवै वहां रोहिणी वास प्रथम २ नक्षत्र समुद्र १ तट १ संधि १ पर्वत १ संधि १ तट इसी क्रमसे रोहिणीवास जान लेवे तथा रोहिणी चक्र से समझ लेवे ॥फलम्॥ समुद्रेतुमहावृष्टिस्तटेवृष्टिसुशोभना पर्वतेर्बिंदुमात्रश्च खंडवृष्टिश्चसंधिषु ॥ **समयकावासजानना ॥**

रोहिणी का वास समुद्र में हो तो संवत्सर का वास माली घर होताहै, तट में धोबीघर बास संधिमें वैश्यघर बास पर्वतमें रोहिणी का बास होनेसे समय का बास कुम्हारघर होता है ॥

समयवाहनविचार ॥

सूर्यादि संवत्सर का राजा होवै उससे क्रमसे समय वाहन जानना यथा- अश्व १ मृग २ वृषभ ३ सियार ४ चातक ५ दर्दुर ६ महिष ७ उक्त वारोंके क्रमसे समय वाहन जानना आषाढ़ कृष्णपक्ष की कृष्णारोहिणी कहलाती है ॥

अथसमयमुहूर्त्ताः समयदिनानि ॥

मेषादि द्वादश संक्रांतियों के मुहूर्त्त एकत्र करने से समय मुहूर्त्त होता है ॥ चैत्र शुक्ल १ से चैत्र कृष्ण ३० तक वारानुसार जितने दिन हों वह समय के दिन होते हैं ॥ कार्तिक शुक्ल ५ सौभाग्य पंचमी कहलाती है शुक्लपक्ष की १० रवि-युक्त होवै तो रवि दशमी होती है शुक्लपक्ष की तिथि जिसवार युक्त हो उसी वार के नाम से वह तिथि बोली जाती है दोनों पक्षों की ४मंगलको हो तो मंगलाचौथ ८ बुध होवै तो बुधाष्टमीहोती है ॥

वर्षऔरवर्षेशकुंडलीबनानेकी रीति ॥

गत वर्ष की चैत्र कृष्ण ३० की घटी को इष्टकाल मानकर लग्न गृहादि रख देवै वह वर्ष कुंडली होती है और मेषार्क प्रवेश समय की लग्न वर्षेश लग्न होती है ॥

पञ्चाङ्गमेंचंद्रलिखनेकीरीति ॥

सर्वर्क्ष बनाके जिस चरण में राशि प्राप्ति हो उस घटी परिमित इष्ट करिके चन्द्र लिखदेवै ॥

करणलिखनेकीरीति ॥

एक तिथि में दो करण भोग करते हैं, शुक्लपक्ष की परिवा के उत्तरार्द्ध में ववकरण एक तिथि में दो करण के क्रम से कृष्णपक्ष की चतुर्दश के पूर्वार्द्ध में विष्टि (भद्रा) करण भोग करता है और कृष्ण १४ के उत्तरार्द्ध में शकुनी करण व अमावस्या को चतुष्पद करण नागकरण और शुक्ल परिवाके पूर्वार्द्ध में किंस्तुघ्न फिर शुक्ल परिवाके उत्तरार्द्ध में ववकरण भोग करता है बारम्बार इसीक्रमसे जानना ॥ करणोंके नाम ॥ वव १ बालव २ कौलव ३ तैतिल ४ गर ५ वणिज्य ६ विष्टि (भद्रा) ७ ॥ शकुनी १ चतुष्पद २ नाग ३ किंस्तुघ्न ४ ॥ शुक्लपक्ष की परिवासे ववादि करण कृष्णपक्ष की १४ के पूर्वार्द्ध को बृष्टि आठ आवृत्ति में भोग करते हैं ॥ और कृष्ण १४ के उत्तरार्द्ध से शुक्ल १ के पूर्वार्द्ध तक शकुन्यादि ४ करण भोग करते हैं ॥

इंग्रेजीसन् तथा महानीआदि ॥

शाकेमें ७८ जोड़नेसे तथा संवत् में ५६ हीन करनेसे इंग्रेजी सन् पौष मास अर्थात् धन के सूर्यके १७ अंश के अन्त पर्त में प्रारंभहोताहै। नाम महीना और तादाद दिन यथा ॥ १ जनवरी ३१ दिनका २ फरवरी २८ दिनका ३ मार्च ३१ दि० ४ अप्रेल ३० दि० ५ मई ३१ दि० ६ जून ३० दिनका ७ जुलाई ३१ दिनका ८ अगस्त ३१ दि० ९ सितंबर ३० दि० १० अक्तूबर ३१ दिनका ११ नवम्बर ३० दि० १२ दिसम्बर ३१ दिनका और सन् में ४ का भागदेने से जिस सनमें शेष शून्य बचे उस सन् में फरवरी २९

दिन की होती है और जब पूरे सैकड़े का सन् होवे तो सन् ४०० का भागदेय जो शून्य शेष बचे तो फरवरी २६ दिन नहीं तो २८ दिन की होतीहै॥२५ दिसम्बरको बड़ा दिन होताहै॥

मुसलमानी हिजरी सन्और महीना ॥

शाके में ५४३ तथा विक्रमीय संवत् में ६७८ हीन शेष को २ जगह रखकर ९१ के भाग से दूसरी जगह के अंक हीन किये शेप के ३२ के भागसे लब्धको दूसरी जगहके अंक में युक्त करके १२ भागसे जो लब्धि आवे सो हिजरी सन् शेष बचे सो गतमास जानना चाहिये ॥ दूसरी रीति ॥ सं० १९५९ के प्रारंभ में हिज़री सन् १३२० मुहर्रम मास प्रारंभ हुये हैं यह मानी महीना चंद्राधीन होताहै इसकारण ३२ महीने के बादलौंद पड़ने से इस्में अंतर होजाताहै जैसे कि एक अधिक मास होने के बाद प्रारंभ संवत् मे सफर का महीना होवैगा जितने अधिक होते जांयगे उतने मुसलमानी मास प्रारंभ संवत् में बढ़ते जांयगें. अधिक मास जाननेकी स्पष्ट रीति आगे लिखेंगे ॥

अगर सं-१९५९ से पहिले का जानना हो तो विपरीति ग्रहण ... पीछेजबका जानना होय वहां तक जितने अधिक मास हुए हैं वह सं०१९५९ के १ मुहर्रम मासमें घटानेसे अभीष्ट संवतका मास होवैगा ॥ और ३२ वर्ष में १२ अधिकमास होते हैं इसकारण हिजरी सन् ३३वर्षमें,एक संख्याबढ़ जाता है॥ इत्यादि

पंचाङ्गमेंतारीख लिखनेकीरीति ॥

इसका महीना चंद्रमके अनुसार होनेसे कभी २९ दिनका कभी

३० दिनका होताहै कृष्ण पक्ष ३० को २८ तारीख लिखकर उलटे क्रमसे अर्थात् कृष्ण १४ को २७ कृष्ण १३ को २६ इसक्रम से १ तक रख जावे ॥ स्पष्टान्यक्रम् ॥ चन्द्र दर्शनहोने के बाद प्रात को मुसलमानी महीने की पहिली तारीख होतीहै यह सिद्धांत है शुक्लपक्ष परिवाको चन्द्र दर्शन होनां व न होना जानने के लिये आगे लिखेंगे ॥

मुसलमानी त्यौहार ॥

रोजा रमजान की १ तारीख से शुरू होताहै और सब्वालकी १ तारीख को ईद मनाकर पूराहोताहै जिल्हिज की १० तारीख को बकरीद और ६ तारीखको हज्ज होती है मुहर्रमकी१०तारीख को ताजिया और साबानकी १४ तारीखको शब्बेरात होती है ॥

महीनोंके नाम ॥

१ मुहर्रम २ सफर ३ रबीउलाव्वल ४ रबीउलाखिर ५ जमादी-उलाव्वल ६ जमादीउलाखिर ७ रजब ८ साबान ९ रमजान १० सब्वाल ११ जिल्काद १२ जिल्हिज ॥

पारसीसन् जाननेकी विधि ॥

शाके में १५२१ अथवा विक्रमीय संम्वत् में १६८८ हीन करने से शेष बचे सो पारसी सन् (इयजदेजर्दी) होते हैं इसका प्रारंभ भादों से होता है ॥

महीनों के नाम ॥

१ फरवार्दिन २ आर्दिबेहस्त ३ खोरदाद ४ तिर ५ अमरदाद ६ शेरेवर ७ मेहर ८ आबान ९ आदर १० देह ११ वहमन १२ आस्पंदाद यह सब महीने ३० तीस दिन के होते हैं पीछे दिन ५ की गाथा होती है ॥

याहूदीसनबनानेकाक्रम ॥

शाके में ३९२८ अथवा विक्रमीय संवत् में ३७०३ युक्त करने से याहूदीसन होताहै ॥ कुँवार सुदी १ के समीप प्रारंभ होता है ॥ शाके में १३५ जोड़देने से विक्रमीय संवत होताहै ॥

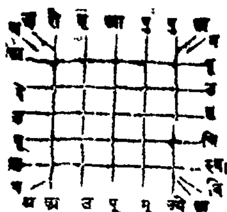
शुक्लेप्रतिपदांचन्द्रदर्शनजाननेकाक्रम् ॥

अमावाश्या की घटीको ६० घटीमें घटानेसे जोशेष रहे उसको दिनमानमें जोड़ देवे जो अंक प्राप्ति हो उसको अलग रक्खे फिर देखे कि सूर्य किस राशिके हैं और राहु किस राशिका है फिर चन्द्र दर्शन सारिणी में उसी राशिके सूर्य के सामने और उसी राशिके राहुके नीचे राहु सूर्य मिलकर जो कोठा प्राप्तिहो उसमें जो अंकहो वह अंक पूर्व अंक अलग रक्खे हुयेसे अधिक हो तो प्रतिपदाको चन्द्रदर्शन नहीं होगा द्वितियाको होगा और जो पूर्व अंकसे सारिणी अंक कमहो तो शुक्ल प्रतिपदाको चंद दर्शन अवश्य होगा ॥

चंद्र दर्शन सारिणी ॥

राशि	मेष राहु	वृष राहु	मि० राहु	कर्क राहु	सिंह राहु	कन्या राहु	तुला राहु	वृ० राहु	धन राहु	मकर राहु	कुंभ राहु	मीन राहु
मेष १ सूर्य	४१	५४	५५	५२	५६	५५	५४	५३	५२	५५	५३	५२
वृष २ सूर्य	४८	५१	५४	५८	५७	५७	५५	५३	५०	४६	४७	४७
मिथु ३ सूर्य	४४	४७	५६	५७	५९	६३	६३	६१	५६	५१	४९	४४
कर्क ४ सूर्य	४	४९	५३	६०	६४	७३	७७	७७	७२	६६	६२	५२
सिंह ५ सूर्य	६४	५८	५९	६४	७१	८९	८९	९४	९३	८२	८२	७२
कन्या ६ सूर्य	७८	६९	६५	६५	६८	७८	८८	९७	१०२	१००	८७	८९
तुला ७ सूर्य	८४	७४	६६	६२	६४	६६	७५	८४	८२	८७	९७	९२
वृश्चि ८ सूर्य	७८	७१	६३	५७	५४	५४	५७	६४	७३	७८	८२	६६
धन ९ सूर्य	६६	६३	५७	५२	४८	४५	४२	४८	५३	५९	६२	६६
मकर १० सूर्य	५८	५८	५६	५३	५०	४७	४६	४६	४८	५१	५४	५६
कुंभ ११ सूर्य	५३	५६	५५	५४	५३	५२	५१	४९	५०	५१	५२	५३
१२ सूर्य	५५	५३	५५	५६	५५	५५	५४	५४	५३	५२	५४	५४

अथ पञ्चशलाकाचक्रम् ॥



विवाह के नक्षत्र के सामने १ रेखा पर कोई ग्रह उस नक्षत्र का होवे तो वेध होता है विवाहे वर्जितः ॥

विवाहलग्नमुहूर्त्तादि ॥

विवाह-मेष-वृष-मिथुन-वृश्चिक-मकर-कुंभ-इन के सूर्य में करना शुभ है और मिथुन के सूर्यमें आषाढ़ सुदी १० तक करना श्रेष्ठहै शुक्र गुरु का उदयास्त होवे तो अस्त होने से ३ दिन पहिले से लेकर उदय के ३ दिन पीछे तक विवाह तथा शुभकर्म्म में वर्जित है और सिंह की बृहस्पति में भी विवाह करना अशुभ है नक्षत्र रोहिणी १ मृगशिरा २ मघा ३ उत्तराफागुल्णी ४ हस्त ५ स्वाति ६ ऽनुराधा ७ मूल ८ उत्तराषाढ़ ९ उत्तराभाद्रपद १० रेवती ११ यह नक्षत्र विवाह में शुभ हैं कृष्णपक्ष की १३ से शुक्ल पक्ष की परिवा तक (क्षीणचंद) विवाह में नहीं लेना चाहिये और व्यतीपात व वैधृत योग और विष्टि (भद्रा) करण यह विवाह में नहीं होना चाहिये ॥ गोधूली तथा रात्रि की लग्न लेना शुभ है लग्न से छठे आठवें (त्रिक) कोई ग्रह न होय

चंद्रमा वर कन्या की राशिसे शुभ होना चाहिये चंद्र जीवादि शुभस्थानों में होना चाहिये ॥

अथलत्तादोषज्ञानम् ॥ १ ॥

सूर्य अपने नक्षत्र से १२ नक्षत्र को शनिश्चर आठवें को और बृहस्पति छठे नक्षत्र को मंगल तीसरे नक्षत्र को लत्ता मारता है यह गृह अपने नक्षत्र से आगेवाले को लत्ता मारते हैं तथा चंद्रमा अपने नक्षत्र से बाइसवें नक्षत्र को और राहु नवयें को बुध सतयें नक्षत्र को लत्ता मारता है शुक्र पांचयें को लत्ता मारता है यह गृह अपने नक्षत्रसे पीछेवाले नक्षत्रको लत्ता मारते हैं यह लत्ता विवाह में वर्जित है ॥ लात दोष मालव देश में वर्जित और सब देशो में होता है ॥

अथपातदोषज्ञानम् ॥ २ ॥

व्यतीपात-वैधृति गंड-साध्य-हर्षण-शूल इन योगों का जिस नक्षत्र में अंत होय उस नक्षत्र में पात दोष लगता है ॥ बंग वा कलिंग देश में वर्जित है ॥ वा कुरुक्षेत्र वा जांगल में वर्जित है और सर्वत्र विवाह होता है ॥

युतिदोषज्ञानम् ॥ ३ ॥

जिस गृह में चन्द्रमा होय उसी घर में शुक्र बिना और ग्रह होय तो युति दोष होताहै ॥ तस्यफलम् ॥ सूर्य संयुक्त होय तो हानि होय मंगल युक्त होयतोमृत्यु होय राहु या केतु या शनियुक्त होवे तो मूल नाश करे अगर चन्द्रमा अपने वर्गोत्तम में होय नवांशाः मेषा उच्चको हो या मित्र घरहो तो युति दोष नहींहोता युति दोषमें सर्वत्र विवाह होताहै ॥

पंचशलाकावेधज्ञानम् ॥ ४ ॥

रोहिणीऽभिजित् का परस्पर वेधहै मृगशिरा उत्तराषाढ का आर्द्रा पूर्वाषाढ का पुनर्वसु मूलका पुष्प ज्येष्ठा का श्लेषा धनिष्ठा का मघाश्रवणका पूर्वाफाल्गुणी अश्वनीका और उत्तराफाल्गुणी रेवती का हस्त व उत्तराभाद्रपद का चित्रा व पूर्वाभाद्रपदका स्वाति व शतभिष का विशाषा व कृतिका का ऽनुराधा व भरणी का परस्पर वेध होताहै पंचशालाकाचक्रमेदेखो चक्रलिखचुके हैं॥ विवाह नक्षत्रके वेध नक्षत्रपर कोई गृह होय अर्थात् पंचशलाका को एक रेखामें परस्पर विवाह का नक्षत्र और कोई गृह होय तो सर्वत्र वर्जितहै ॥ फलमृत्युकारक ॥

अथयामित्रदोषज्ञानम् ॥ ५ ॥

विवाह के नक्षत्र से चौदहवें नक्षत्र पर कोई ग्रहहोय तौयामित्र दोष जानिये सो वर्जित है परंतु विवाह सर्वत्र होते हैं ॥

अथबुधपंचकदोषज्ञानम् ॥ ६ ॥

सूर्य केगत अंशऔर १५ वा १२ वा १० वा ८ वाइनकोअलग२ धरके जोड़ना तिन अंकों में नव ९ का भाग लेना शेषपांचबचै तो क्रमसे पांचो स्थानमें पांच पंचक रोग १, अग्नि २, राज३, चौर ४, मृत्यु ५, होती हैं सो विवाह में वर्जितहै केवल मृत्यु पंचक विवाह में सर्वत्र वर्जितहै ॥

अथैकार्गलदोषज्ञानम् ॥

अतिगंड विष्कुंभ वज्र परिघ व्यतीपात शूल व्याघात वैधृति गंड इन योगनमें एकार्गल दोष का विचार होताहै सूर्यके नक्षत्र

से चन्द्र के नक्षत्र तक अभिजित् समेत गिने जो नक्षत्र सम संख्यक होंय और पूर्व कहे योगभी होंय तो एकार्गल दोष जानिये सो काश्मीरमें बर्जितहै और देशमें विवाह होताहै ॥

अथोपग्रहदोषज्ञानम्॥८॥

सूर्यके नक्षत्रसे चन्द्रमाके नक्षत्र तक गिने जो पांच व ८ या १० या ७ या १४ या १९ या १५ या १८ या २१ या २२ या २३ या २४ या २५ होंय तो उपग्रह दोष जानिये सो कुरु वा बाह्लीक देशमें बर्जितहै और सब देशोंमें इस दोषमें विवाह होताहै ॥

अथक्रांतिसाम्यज्ञानम् ॥ ९ ॥

सिंह मेषके परस्पर तथा वृष मकर तथा तुला कुंभ तथा कन्य मीन तथा कर्क वृश्चिक तथा धन मिथुनके परस्पर सूर्य चन्द्रम होंय तो क्रांतिसाम्य दोष जानिये सो सर्वत्र बर्जितहै ॥

अथदग्धातिथिदोषज्ञानम् ॥

मीन वा धन के सूर्य में द्वीज तिथि दग्धा होती है और वृष वा कुंभ के सूर्य में चौथ दग्धा होतीहै और मेष वा कर्क के सूर्य में छठ दग्धा होतीहै और कन्या वा मिथुन के सूर्य में अष्टमी दग्धाहै तथा वृश्चिक और सिंह के सूर्य में दशमी दग्धा है तथा मकर और तुला के सूर्य में द्वादशी दग्धाहोतीहै सो बर्जित है ॥ बुध गुरु शुक्र लग्न केंद्र त्रिकोण में होतो शुभहै ॥

अथपंचांग में इनदशोदोषों के लिखने का क्रम् ॥

लत्ता पातादि १० दोष जो ऊपर कह चुकेहैं जिसमें दोषहो उसकी लकीर टेढ़ी (ऽ) और जिसमें दोष न हो उसकी लकीर

सीधी (।) इस क्रमसे दशो दोष की दश लकीरें लिखदेवे ॥

ग्रहणसंभवज्ञानम् ॥

सूर्य अथवा चंद्रग्रण होने से१५दिन में तथा ५½ साढ़े पांचमहीने में तथा ६ महीनेमें तथा ६½ साढ़े छे महीने गृहण का संभव होताहै और पर्व्व (पूर्णावा अमावा) कालीन स्पष्ट रवि में राहु को घटाने से व्यग्वर्क होता है व्यग्वर्क मेषादि हो तो उत्तर तुलादि हो तो दाक्षिण होता है व्यग्वर्क के भुज करके अंश करे जो १५ अंश से कम हों तो सूर्य अथवा चंद्रग्रहण का संभव होता है व्यग्वर्क दक्षिण हो और ८ अंश से कम हों तो और व्यग्वर्क उत्तर हो और ८ अंश से अधिक और १५ अंश से कम हों तो सूर्य ग्रहण होता है इस विपरीति सूर्य गृहण नहीं होता है सूर्य वा चन्द्र गृहण संभव होने से भी यदि अमावाश्या दिन में हो तो सूर्य गृहण दिखाता है और पूर्णमा रात्रि में होवे तो चन्द्र गृहण दिखाई देता है ॥

मेषादि द्वादशराशिगतग्रहणफलम् ॥

उपरागोयदामेषे पीड्यंतेसर्वदाजनाः ॥ कांबोजांध्रिकिरातश्च पांचालश्चकलिंगकः ॥ १ ॥ वृषेचगृहणेगोपाः पशवःपाथिका जनाः ॥ महांतोमनुजोयश्च पीड्यंतेसाधवस्तथा ॥ २ ॥ रविश्चंद्रमसौग्रस्तौ मिथुनेचवरांगनाः ॥ पीड्यंतेवाह्लिकामत्स्या यमुना तट वासिनः ॥ ३ ॥ कर्कटेगृहणेपीडा मल्लादीनांचजायते ॥ अंतरसर्वरानांच तदामत्स्यविनाशिनः ॥ ४ ॥ सिंहेचगृहणेपीडा सर्वेषांवनवासिनाम् ॥ नृपानांनृपतुल्यानां मनुजानांचजायते५॥ कन्यायांगृहणेपीडा त्रिपुराणांचशालिनां ॥ कवीनांलेखकानांच

जायतेपीड्यतेसदा ॥ ६ ॥ तुलायामुपरागेत्र दशार्णवाहुकाहुका॥ मरुवश्चपरात्यश्च पीड्यंते साधवश्चये ॥ ७ ॥ वृश्चिकेग्रहणे पीडा सर्पजातेश्चैजायते ॥ औदुम्बरस्यभाद्रस्य चोलायोध्येयकस्यच ॥ ८ ॥ यदोपरागेचापेत्रतदामत्स्याश्चवासिनः ॥ विदेहमल्लपांचालाः पीड्यंतेभिषकोविदैः ॥ ९ ॥ मकरेग्रहणेपीडा नीचानांमंत्रवादिनाम् ॥ स्थविराणांभटानांच चित्रकूटस्थसंश्रयः ॥ १० ॥ कुंभेचैवोपरागेत्र पश्चिमस्थैस्तथार्बुदैः ॥ तस्करैरोगिणांमृत्युः पीड्यंतेवहुधाबुधा ॥ ११ ॥ मीनोपरागेपीड्यंते जलद्रव्याणिसागराः ॥ जलोपजीवनोलोका येचयेद्यप्रतिष्ठिताः १२ ॥

अथभद्राज्ञानम् ॥

कृष्णपक्ष में तीज और दशमी को भद्रा पर दल में वास करती है और सप्तमी वा चतुर्दशी को भद्रा पूर्वदल में वास करती है शुक्लपक्ष में चौथ वा एकादशी को भद्रा परदल में वास करती है और अष्टमी वा पूर्णमासी को भद्रा पूर्वदल में वास करती है ॥ पूर्वार्द्ध की रात्रि में और परार्द्ध की दिन में हो तो दोष नहीं होता है ॥

अथभौमवतीवासोमवतीअमावश्यापर्वयोगः ॥

अमावश्या सोमवार हो तो सोमवती योगः मंगलवार को हो तो भौमवतीयोग भौमवती में केवल गंगा स्नान से एक हजार गोदान का फलहै और सोमवतीमेंइससे भी अधिकफलहै॥

अथकपिलाषष्ठीपर्वयोगः ॥

कुँवार वदी ६ को मंगलवार वा रोहिणी नक्षत्र तथा व्यतीपात

योग युक्त होय तो असंख्य पुण्यको देनेवाला कपिला नामक पर्व होता है तीर्थ स्नान में बड़ा पुण्य है॥

अथपुष्करपर्व्वयोगः॥

बिशाषा नक्षत्र के जब सूर्य होंय और दिन नक्षत्र कृत्तिका होय तो पुष्कर संज्ञक योग होता है सो स्नान पुष्कर में दुर्लभ है अर्थात् बड़ा फल है॥

अथवारुणीपर्व्वयोगाः॥

चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को सतभिष नक्षत्र सूर्योदय में मिले तो वारुणी पर्व होताहै तिसमें गंगास्नान करनेसे कोटि सूर्य्य गृहण समान फल होता है॥ और इस योग में शनिवार भी होवे तो महा बारुणी संज्ञक पर्व होता है॥ शुभ योग व शतभिष नक्षत्र व शनिवार त्रयोदशी यह सब योग होने से महावारुणी पर्व होता है तिसमें गंगा स्नान करने से तीन कोटि कुल को उद्धार करने को समर्थ है॥

अथगोविन्दद्वादशीपर्वयोगः॥

धनकी वृहस्पतिहोय कुंभ के सूर्य होंय कर्क का चंद्रमा होय फाल्गुण शुक्ल द्वादशी होय रविवार होय तथा पुष्य नक्षत्र और शोभनयोग होय तौ गोविन्द द्वादशी नाम पर्व होता है तिथि सूर्योदय होना चाहिये इस पर्व में अयोध्या के स्नान का बड़ा माहात्म्यहै॥

अथार्धोदयमहोदयपर्वयोगः॥

माघ या पौष्य की अमावश्याको श्रवण नक्षत्र और व्यती-

पात योग होय तो अर्द्धोदय पर्व होता है इनयोगों में से कोई हीन होय तो महोदय संज्ञक योग जानना ॥ अर्द्धोदय योग में सर्व जल गंगा के समान होताहै और ब्राह्मण सर्व-शुद्धात्माब्रह्मा के समान होतेहैं जोकुछ भी किंचिन्मात्र दानदेय सो दान सुमेरु के बराबर होताहै महोदय का भी यही फलहै ॥

अथ व्रतादिनिर्णयो तत्रादौचैत्राश्विनशुक्ल प्रतिपदा नवरात्रनिर्णयः ॥

अमावश्यावेधी परेवाको नवरात्र-व्रत करना वर्जित उदयमें प्रतिपदा तीन मुहूर्त्तक मिले वही व्रत के योग्य है ॥

अथगणगौरीव्रतनिर्णयः ॥

चैत्र शुक्ल चौथ को गणगौरीव्रत होताहै सो मध्याह्न व्यापनी लेना योग्य है पार्वती व गणेशजी का पूजन करना चाहिये पकान्न मिष्ठान्न पुष्पयुक्त ॥

अथएकादशी निर्णयः ॥

एकादशी की हानिहोय द्वादशी संपूर्ण होयतो उसी द्वादशीको व्रत करना चाहिये और त्रयोदशीको पारण करै उदयमएेंकादशी थोड़ीहोय अंत में त्रयोदशी होय मध्य में द्वादशी यहयोग द्वादशी की हानि होने से होता है इस एकादशी की अस्पृशा संज्ञाहै ऐसी एकादशी व्रत के योग्यहै विष्णु के प्रियहै ऐसी एकादशी एक का व्रत करनेसे हजार व्रत के तुल्य फलहै और पुण्य हजार गुणाहै और इसमें त्रयोदशी को पारण करना योग्य है और बाकी

में १२ को पारण करना योग्यहै तथा दशमी वेधी एकादशी के व्रत करने से पहिला कियाहुआ भी फलनाश होताहै ॥

अथानंतचतुर्दश्यादिनिर्णयः ॥

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी सब महीनों की शिवरात्रि इत्यादि अर्द्धराति व्याविनी योग्यहै और भाद्रशुक्ल में अनंत चतुर्दशी होती है सो एक मुहूर्त तक मिले तो व्रत के योग्य है तथा वैशाष शुक्ल १४ को नृसिंह व्रत होता है सो सायंकाल युक्त लेना चाहिये ॥

नागपंचमीनिर्णयः ॥

श्रावण शुक्ल की ५ नागपंचमी होतीहै सो छठि युक्त अर्थात् सूर्योदय की पंचमी में करना योग्य है नागदेव प्रसन्न होते हैं और शेष पंचमी जोहैं सो चौथ विद्धा करे ॥ अन्यप्रकारः अन्य प्रकार से मध्यान्ह व्यापिनी पूजा योग्यहै और आचार्य कहते हैं कि पूर्वाह्ण गामिनी मोक्ष की देनेवाली है ॥

अथश्रावणीनिर्णयः ॥

श्रावण शुक्ल १५ को अपराह्ण काल में रक्षाबंधन करना योग्य है जो भद्रा में रक्षाबंधन करै तो पुरके राजाको हनै ॥

अथबहुला ४ व्रतनिर्णयः ॥

भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी को बहुलाव्रत होता है सो पूर्व वा पर की जो चन्द्रोदय विषे मिले उसी को व्रत के योग्य जानने को कहा है ॥

श्रीकृष्णजन्माष्टमीनिर्णयः ॥

भाद्रपद कृष्ण ८ को जन्माष्टमी कहते हैं सो अर्द्धरात्रि व्यापिनी योग्य हैं जो दोनो दिन अर्द्ध व्यापिनी होय तौ पर दिन व्रत के योग्यहै ॥

अथहरतालिकानिर्णयः ॥

भाद्रपद शुक्ल ३ को गौरी व्रत होताहै सो एक मुहूर्त तक उदय समय में मिले तौ वही व्रतके योग्य कही गई है ॥ अन्य मतेन ॥ मुहूर्त्तमात्र उदय में तीज मिले उसी दिन गौरि व्रत करै और जो शुद्धाधिक (६० घड़ी से अधिकवाली तिथि वृद्धिः) मिले उसकी गणयोग संज्ञाहै व्रतके योग्यहै ॥

अथऋषिपंचमीनिर्णयः ॥

भाद्रपद शुक्ल ५ को ऋषिपंचमी व्रत होताहै मध्याह्न गत व्रतके योग्य कही है और हस्तोद्भव भोजन वर्जितहै ॥

अथदूर्वाष्टमीनिर्णयः ॥

भाद्रपद शुक्ल ८ को दूर्वाष्टमी होतीहै पूर्व व्यापिनी ग्राह्यहै तथा और आचार्यों का यह मत है कि शुक्लपक्ष की अष्टमी नवमी समेत करना तथा कृष्णपक्ष की अष्टमी पूर्वविद्धायोग्यहै ॥

अथमहालक्ष्मी ८ निर्णयः ॥

कुँवार कृष्ण ८ को महालक्ष्मी व्रत होताहै तीन मुहूर्त्त तक पर मिले वही व्रतके योग्य है परन्तु धन लाभ की अभिलाषासे व्रत करनेवाला चन्द्रोदय व्यापिनी में व्रत करै ॥

अथविजय १० (दशहरा) निर्णयः ॥

कुँवार शुक्ल १० को विजय १० कहते हैं सो पूर्वयुक अपराह्ण

कालमें लेना चाहिये पूजन प्रशस्त है और श्रवणके योगसे पर मिले तौ पर और पूर्वमिले तो पूर्व की गृहण करे ॥

अथकर्क ४ निर्णयः ॥

कार्तिक कृष्ण ४ को करवा चौथ कहतेहैंसो चन्द्रोदय व्यापिनी में गौरीव्रत कहाहै सौभाग्यदेनेवाला है ॥

अथदीपमालिकानिर्णयः ॥

कार्तिक कृष्ण अमावाश्या को सायंकाल व्यापिनी में दीपदान करना चाहिये पूर्ण अर्द्धरात्रिको श्रीलक्ष्मीजीका पूजन योग्यहै ॥ दीपदानमें स्वात्यर्क्ष वर्जितहै ॥

अथसंकष्टहरणचतुर्थीनिर्णयः ॥

माघ कृष्ण ४ को सकट चौथ व्रत होताहै सो चन्द्रोदय व्यापिनी ग्राह्यहै तिसके व्रत करनेसे समग्र सुख होता है ॥

अथहोलिकानिर्णयः ॥

फाल्गुण शुक्ल पूर्णमासी की रात्रिमें पूर्वयुत् होलिका दाह करना योग्य है परन्तु भद्रा वर्जितहै इसकारण पर में होती है ॥

शेषतिथिनिर्णयोसंक्षेपः ॥

तीज छठि हलछठि वसंतपंचमी यमद्वितीया अष्टमी श्रीरामनवमी चतुर्दशी अमावस व्यासपूजा पूर्णमासी एकादशी इतनी तिथि पर युत करनी चाहिये और वटसावित्री का पूजनमात्र पर युत करना चाहिये ॥ प्रदोप सायंकाल युत और गणेश चौथ चन्द्रोदय में करना चाहिये ॥ जन्माष्टमी बुध रोहिणी के युक्त होय और शिवरात्रि व चौदसि इनको पूर्वयुत व्रत करना योग्य है तथा तिथि के अन्त में पारण योग्य है तीज पंचमी दुर्गाव्रत

पर युक्त योग्यहै और जो बाकी रही तिथि सो पूर्व युक्त करना चाहिये ॥ इतिव्रतादिनिर्णयोः ॥

अथाधिकमासज्ञानम् ॥

जिस विक्रमीयसंवत्में अधिकमास जाननाहो कि अधिकमास होगा या नहीं और कौनमहीना लौंदकाहोगा॥क्रम॥संवत् १९५१ विक्रमीयमें अभीष्ट संवत्को घटावे अथवा१९५१को अभीष्ट संवत् में घटावे शेषको दो जगह रक्खे १ जगह १९का भागदेनेसे जो लब्धि होय सो (दूसरी जगह में ११ से गुणाकरके) गुणनफल मे जोड़देय फिर ३० का भाग देकर जोशेष फल बचै उस शेष फलको २६ में ऋण धन करना तब स्पष्ट अंक होताहै यथा १९५१ में जो अभीष्ट संवत् घटै तो शेषफलको २६ में ऋण करना और जो अभीष्ट संवत् १९५१ घटै तो शेषफलको २६ में धनकरके ३०से भागदेकर शेषको ग्रहण करना तब स्पष्टांक होवैगा जिस संवत्में स्पष्टांक १९ तथा २० । २१ । २२ । २३ । २४ । तथा २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ०० । होवै उस संवत्में अवश्य अधिक मास होवैगा और स्पष्टांक जितनी गिनतीहो उसको चैत्रशुक्लादि परिवामें जोड़नेसे जो तिथि प्राप्तिहो उसके दूसरे दिन मेषकी संक्रांति हुआ करती है ॥ मास जानने का क्रम ॥ जिस महीने में संक्रांति न होय वह महीना लौंद का होताहै यहां महीना शुक्ल पक्षादिसे जानना ॥ सरलरीति ॥ पूर्वोक्त जो स्पष्टांकहै उसको ३० मे घटावे जो शेष बचे उसको आधा करके जो गिनती होय उसके अनुसार वैशाख आदि करके जो मास आवे वही महीना लौंद का होगा अथवा १ न्यूनाधिक करनेसे लौंद मास होवैगा ॥ इति ॥

सप्तऋषियोंकीनक्षत्रस्थितिज्ञानम् ॥

संवत् १९५६में ५ राशि २१ अंश ३६ कलापर सप्त ऋषियोंकी स्थिति थी प्रति वर्ष ८ कला धन करनेसे आग्रिम वर्षकी स्थिति होतीहै अर्थात् सं० १९५६ से पीछे जितने वर्षका जानना होवे उन वर्षो को ८ से गुणा करके गुणन फल कलाओं को ५ । २१ । ३६ । ०० । में ऋण करनेसे अभीष्ट वर्षमें सप्त ऋषियों की स्थिति जानना इत्यादि ॥

अगस्तकाउदयास्तज्ञानम् ॥

सूर्य राश्यादि ४ । २८ । ५६ । ०० के जब होतेहैं तब शाहजहांपुरमें अगस्त्य का उदय होताहै क्योंकि यहांके पलभा ६ । २२ हैं तथा सूर्य जब राश्यादि०० । २७ ।४। ००। के होतेहैं तब अगस्त्य मुनि का अस्त होताहै ॥

दाड़िम बीजज्ञानम् ॥

दाड़िम में जितने कंगूरे होवैं उनको ७२ से गुणा करि देवै जो गुणन फल होवें उतनेही बीज दाड़िम मे होवैंगे ॥

नींबूतथानारंगीबीजज्ञानम् ॥

नीबू तथा नारंगी पर जो रेखा बनी होती हैं उनको गिनै जो विषम होंय तो ३ से गुणा करै जो सम रेखा होंय तो २ से गुणा करै जितना गुणन फल हो उतने बीज होते हैं ॥

तर्बूजतथाखरबूजाबीजज्ञानम् ॥

तरबूज तथा खरबूजे में जितनी फांकैं होंय उनको ८८ से गुणाकरै जो गुणन फल होवै उतनेही बीज होवैंगे ॥

इति ॥

भगवद्गीता भाषाटीकासहित ॥

इसका टीका बहुतही सरल कियागया है जिसमें हरकोई ऐसी पुस्तक का आशय भलेप्रकार जानसकै ॥ मू०॥) पु० डा०=)

मनुस्मृतिदोहावली ॥

मनुजीके हरश्लोक का एक एक दोहा कहा है हरगृहस्थ को इस पुस्तकको पढ़नाचाहिये ॥ मू० १) पु० डा०=)

मनुस्मृति भाषाटीका सहित ॥

हर श्लोक के नीचे टीका विस्तार पूर्वक सरल रीति से बनाया गया है उत्तम कागज मोटे अक्षर हैं ॥ मू० २) पु० डा० ।-)

मुहूर्तमञ्जरी भाषाटीकासहित ॥

यह मुहूर्तों की प्रसिद्ध पुस्तक पुष्ट कागज पर छपी है ॥ मू० =)॥ पु० डा०)॥

मयूरचरित्र भाषा ॥

जिसमें अनेकानेक नक्षत्रों के उदय समय व अस्त समय का ज्ञान और उनके फलाफल,का विचार वर्णित है ॥ मू० ।) डा०)॥

शैवभक्तमनोरंजनी ॥

इसमें शिव जी के अनेक प्रकार के भजन विनय के वर्णित हैं शिव भक्तों के लिये तो यह पुस्तक बहुतही उपयोगी है इसके भजन बहुत मधुर हैं ॥ मू०)॥ डा०)॥

सीताहरणनाटक ॥

श्री जानकीजीका हरण नाटक की रीति पर वर्णन है जिसके पठन से अवश्य आंसुओं की धारा चलती है ॥ की०।) पु० डा०)॥

हिन्दीभाषाभूषण ॥

इसपुस्तक को बाबू सूर्यमल अखावरी असिस्टेंटमास्टर लायलकालेजियट स्कूलबलरामपुर ज़िला गोंडा ने बनाया है इसमें हिन्दी लिखने पढनेके शब्दों की शुद्धता और उर्दू शब्दोंके दूषण भलीभांति वर्णन किये हैं ॥ मू०-) डा०)॥

विश्रामसागरगुटका ॥

श्री बाबा रघुनाथदास रामसनेही महाराजजीके बनाये हुये ग्रन्थ विश्रामसागर को ऐसा कौन भगवद् प्रेमी है जो नहीं मानता जैसे कि बम्बई में रामायणों के गुटके छपे हैं ऐसेही विश्रामसागर का गुटका तैयार कियागया है कागज चिकना व मजबूत लगायागया है जिल्द भी खूबसूरत व पुढ़ना बनाई गई है कीमत सर्व साधारण को सुगमता के लिये केवल ॥।) रक्खे गये हैं अलावा डाक व्यय के—